पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द 5117, जनवरी, 2016

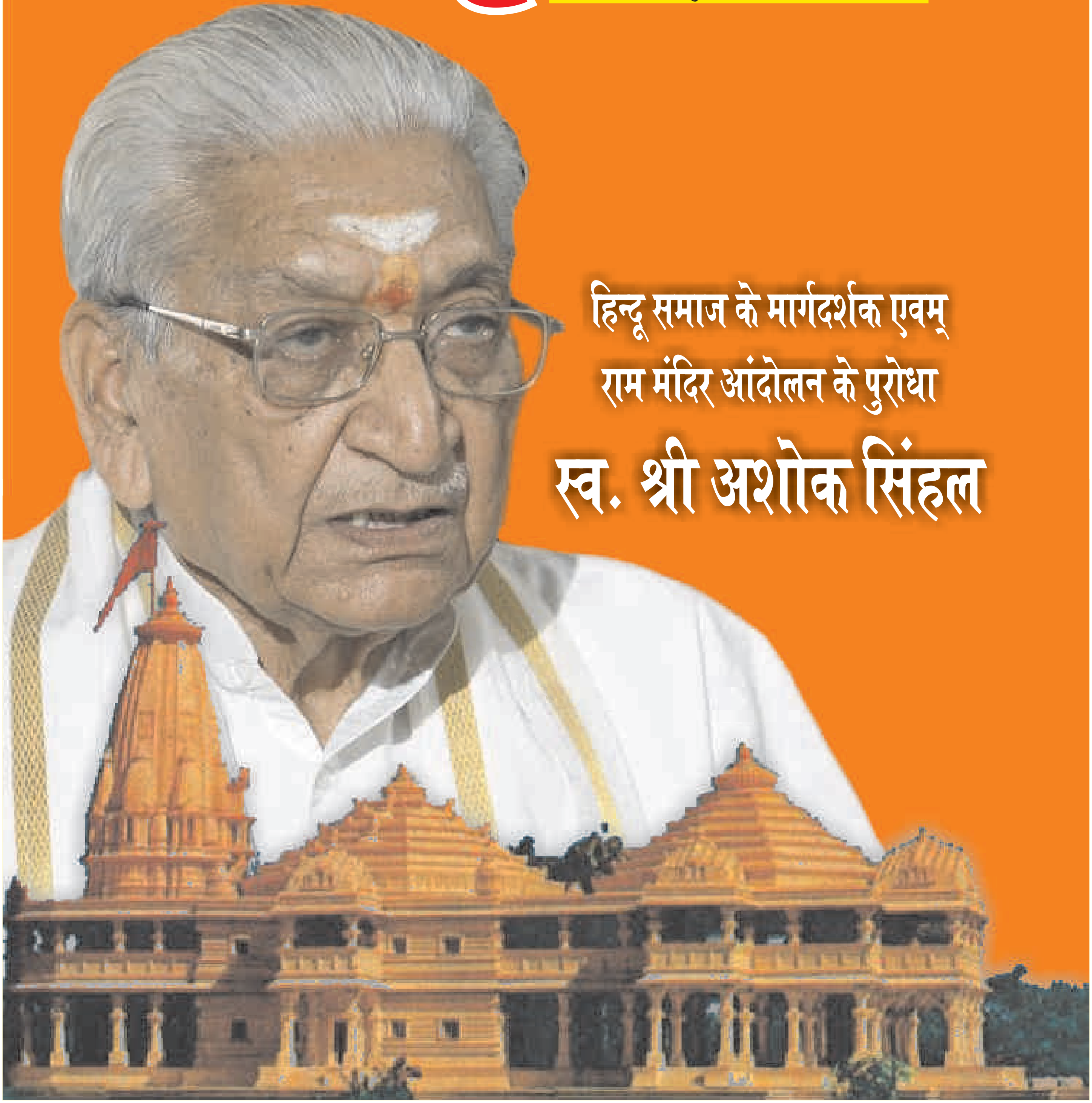

हिन्दू समाज के मार्गदर्शक एवम् राम मंदिर आंदोलन के पुरोधा

स्व. श्री अशोक सिंहल

एसजेवीएन विश्व पटल पर
भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भूटान में
600 मेगावाट की जल विद्युत परियोजना का शिलान्यास किया गया
पवन ऊर्जा
ताप ऊर्जा
सौर ऊर्जा
विद्युत ट्रांसमिशन
जल ऊर्जा
2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में
460 मेगावाट की वृद्धि
हिमाचल प्रदेश में 412 मेगावाट की रामपुर जल विद्युत परियोजना
महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना
हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
वित्तीय वर्ष 2011-12 के दौरान 7610 मिलियन यूनिट तथा वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान 7183 मिलियन यूनिट का रिकार्ड विद्युत उत्पादन।
एकल राज्य से राष्ट्रीय निगम के रूप में विस्तार एवं राष्ट्र की सीमा से बाहर उपस्थिति।
ऊर्जा के अन्य स्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
एनजेपीसी को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 13 जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण।
एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU www.sjvn.nic.in
एसजेवीएन
SJVN
निर्माणाधीन परियोजनाएं: 588 मेगावाट लुहरी, 66 मेगावाट धौलासिद्ध (हिमाचल प्रदेश); 252 मेगावाट देवसारी, 60 मेगावाट नैटवार मोरी, 51 मेगावाट जाखोल सांकरी (उत्तराखण्ड); 900 मेगावाट अरुण- III (नेपाल); 600 मेगावाट खोलोंग्छु, 570 मेगावाट वांग्चू (भूटान); 378 मेगावाट कामेंग- I, 60 मेगावाट रंगानदी-II, 80 मेगावाट दोईमुख स्टेज II एवं सी-रिवर बेसिन (अरुणाचल प्रदेश); 1320 मेगावाट बक्सर ताप विद्युत (बिहार);

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वायथेष्टम्

भावार्थ :

भले ही नीति निपुण लोग निन्दा करें या स्तुति करें, धन सम्पत्ति रहे या न रहे, जो धीर पुरुष हैं वे अपने न्याय के मार्ग से एक पग भी विचलित नहीं होते हैं।

वर्ष : 15 अंक : 12

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द

5117, जनवरी, 2016

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रेस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।

वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

स्व. श्री अशोक सिंहल आध्यात्मिक ऊर्जा के धनी थे

स्व. श्री अशोक सिंहल में एक आध्यात्मिक उर्जा थी जिसके बल पर उन्होंने हिन्दुबहुल समाज का पुनर्जागरण किया। उनके नेतृत्व में देश-विदेश में आयोजित धर्म संसदों एवं विराट हिन्दु सम्मेलनों ने निश्चय से हिन्दुओं में आत्मगौरव और स्वाभिमान का भाव जगाया है। गौ-संवर्धन, सामाजिक-समरसता, अस्पृश्यता निवारण तथा वनवासी-कल्याण आदि विविध क्षेत्रों के लिए कारगर योजना बनाई। भगवान श्रीराम का मंदिर अयोध्या में रामजी के जन्मस्थान पर बने यह उनका स्वप्न ही नही अपितु इस कार्य के प्रति अटूट-प्रतिबद्धता भी थी। यह किसे विदित था कि 17 नवंबर को इस नश्वर शरीर को त्यागकर वह अमर हो जायेंगे। अमरात्मा स्व. अशोक सिंहल भले ही आज हमारे मध्य नहीं लेकिन उनकी प्रेरणा ज्योति से हिन्दू समाज प्रकाशित रहेगा। ❖

सम्पादकीय — संस्कृति के रक्षक एवं करोड़ों के प्रेरणास्रोत. 3
प्रेरक प्रसंग — निर्भय सत्पुरुष. 4
चिंतन — सामाजिक समरसता व्यवहार की बात 5
आवरण — करोड़ों लोगों के प्रेरणास्रोत. 6
संगठनम् — हि.प्र. हाई कोर्ट में अखिल भारतीय अधिवक्ता. 10
पुण्य स्मरण — स्वामी विवेकानंद का कवि रूप 12
देश-प्रदेश — देश में असहिष्णुता का माहौल नहीं 13
देवभूमि — महाकाल मंदिर की महिमा 15
कृषि — खेतों में 'गुड़-गोबर' का घोल 17
समसामयिकी — खतरनाक रूप ग्रहण कर रहे हैं 'ग्लोबल वार्मिंग' 18
काव्य-जगत — बेटी एक वरदान 20
संस्कृतम — संस्कृतं वदाम. 21
घूमती कलम — ऐसे जांबाजों की कहानी जिन्होंने 22
स्वास्थ्य — गुणकारी तुलसी 24
विश्व दर्शन — आइंस्टाइन से भी आगे भारतीय बच्ची 25
महिला जगत — मातृत्व का आदर्श : माता जीजाबाई 26
विविध — स्वतंत्रता का अर्थ 27
पुण्य जयंती — लाला लाजपतराय 29
दृष्टि — पथराव से नहीं पस्त हुए हौंसले. 30
बाल जगत — नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 31

पाठकों के पत्र

संपादक महोदय,

मातृवन्दना के नवम्बर 2015 का अंक कृषि को समृद्ध करती गाय प्रकाशित करके आपने जन-जन तक गाय के महत्व को उजागर किया है। हमारी अर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि व्यवस्थाएं कृषि-ऋषि, गौ-ग्राम आधारित चार युगों से चली आई हैं। परन्तु आज गायों, कन्याओं, कृषि और ऋषियों पर अत्याचार का प्रभाव जोरों पर है यही कारण है कि आज हम चारों ओर से परेशान हैं। इसी कारण बुद्धिजीवी आज भी इन समस्याओं के दुष्प्रभाव के कारण समाज तथा सरकार को मातृवन्दना की तरह जन जागरण में लगना चाहिए। इसी कारण आज की लड़ाई से लेकर आज तक गौ माता की रक्षा हेतु प्रयास जारी हैं। सन् 2009 में कर्नाटक के बेलगांव मठ के जगद्गुरू शंकराचार्य राघवेश्वर भारती के प्रयासों से सारे देश में गौ-ग्राम यात्राएं, 30-09-2009 को कुरूक्षेत्र से प्रारम्भ करके गांव-गांव तक पहुंचाने की कोशिश की गई थी तथा महामहिम राष्ट्रपति को हस्ताक्षरित ज्ञापन भी सौंपे गए थे। परन्तु वर्षों तक कोई प्रयास सरकार ने आज तक नहीं किया।

लक्ष्मी चंद, बांध-कसौली, सोलन

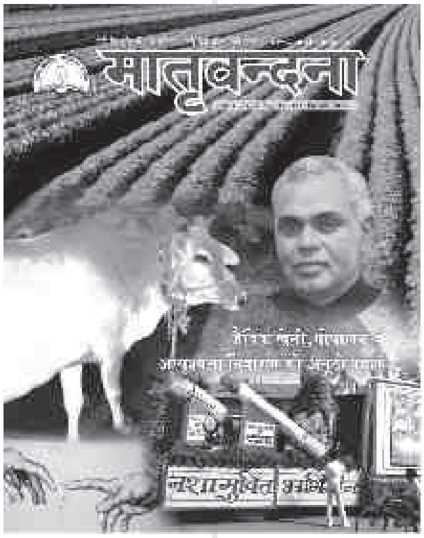

महोदय,

मातृवन्दना मासिक पत्रिका का मैं कई वर्षों से नियमित पाठक हूँ तथा मैं परमपिता परमात्मा का धन्यवादी हूं कि मैंने भारत देश की पावन भूमि हिमाचल में जन्म लिया है। इस देश में स्वयं परमात्मा का अवतरण होता है, लेकिन इस परमधरा पर बसे मानवों की आत्मा में वो सतयुगी संस्कार खत्म होते जा रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति की छाप हमारे मानसपटल पर पड़ चुकी है तथा हम अपने दैवीय संस्कारों को भूलकर दानवीय संस्कारों में लिप्त होते जा रहे हैं। भारत देश देवी-देवताओं ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों एवं महात्माओं का देश है। इस देश में विश्व-बन्धुत्व का पाठ सदियों से पढ़ाया जाता रहा है परन्तु इस कलियुगी परिवेश में राजनीति इतनी कलंकित हो चुकी है कि देश को बांटने पर तुली है। भ्रष्टाचार चरमसीमा पर है।

सभी सुधि पाठकों व विज्ञापनदाताओं को मातृवन्दना संस्थान की ओर से लोहड़ी, मकर-संक्रान्ति व श्री गुरू गोविन्द सिंह जयंती की शुभकामनाएं

भ्रष्टाचार क्या है?भ्रष्टाचार का सीधा सा मतलब है कि जिस मानव का आचरण भ्रष्ट है वही भ्रष्टाचार से लिप्त इन्सान है। हमें देह अभिमान को छोड़कर आत्म-अभिमान में रहना आना चाहिए। यह आत्मज्ञान हम आध्यात्मिक संस्थाओं से सीख सकते हैं। हमें प्रत्येक कार्य निरासक्त भाव से करना चाहिए तथा परमात्मा की याद में रहकर कर्म करना चाहिए। ऐसा करने से हमारी सोच साकारात्मक बनी रहेगी तथा विकारों का दमन भी होता रहेगा। सरकार को देश के युवा वर्ग के लिए इस तरह की आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा भी विद्यालयों में देने का प्रबंध करना चाहिए। उक्त विषयों के लिए योग्य आध्यात्मिक शिक्षक का होना अनिवार्य है। इस पढ़ाई से युवा वर्ग ज्ञानवान व संस्कारित होगा तथा उनमें अच्छे संस्कार आएंगे। अच्छे संस्कारों से ही संसार का परिवर्तन सम्भव है। इस तरह की पहल प्रत्येक अभिभावकों को स्वयं से करनी होगी। हर वर्ग, जाति, लिंग, धर्म के इन्सान को समान दृष्टि से देखना होगा। मातृशक्ति को सम्मान देना होगा क्योंकि हर पुरूष को जन्म देने वाली नारी जाति ही हे। नारी का सम्मान, भारत माता, गौ माता, गंगा माता का सम्मान होगा व विश्व बंधुत्व की भावना पनपेगी।

अमर नाथ कौंडल, अम्बुजा सीमेंट, दाड़लाघाट

स्मरणीय दिवस (दिसम्बर)

स्वामी विवेकानन्द जयंती	*12 जनवरी*
लोहड़ी	*13 जनवरी*
मकर संक्रान्ति	*14 जनवरी*
श्री गुरू गोविन्द सिंह जयंती	*16 जनवरी*
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	*23 जनवरी*
हिमाचल दिवस	*25 जनवरी*
गणतन्त्र दिवस	*26 जनवरी*
लाला लाजपत राय जयंती	*28 जनवरी*

संस्कृति के रक्षक एवं करोड़ों के प्रेरणास्रोत

किसी भी देश की राष्ट्रीयता उस देश की भूमि, गौरवमयी इतिहास, धर्म, संस्कृति, भाषा, साहित्य, उत्सव-पर्व एवं सामाजिक व्यवस्था में प्रतिभासित होती है। स्वदेश-प्रेम भी इन्हीं कारक तत्वों की घनिष्ठता का परिणाम है। सनातन धर्म और इससे जुड़ी हुई संस्कृति के कारण हमने इस धरा को मातृभूमि की संज्ञा दी है। प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनि, चक्रवर्ती सम्राट तथा महान विचारक न केवल इस मातृभूमि को दृढ़ करते रहे हैं। अपितु अपने सभ्य समाज में वैश्विक चेतना को भी जाग्रत करते रहे हैं। यही कारण था कि विश्व की दृष्टि हम पर पड़ी। अपने ज्ञान और समृद्धि के फलस्वरूम हम विश्वगुरु कहलाए। विश्वगुरु की इस छवि को पुनर्जागृत करने के लिए स्वामी विवेकानन्द तथा अन्य कई महान् विभूतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान समय में एक ऐसी शख्सियत समाज में उभरकर सामने आई जिसने विश्व हिन्दू परिषद् और उससे जुड़े कई प्रकल्पों के माध्यम से देश-विदेश में हिन्दुत्व की अलख जगाई, वह व्यक्ति विशेष थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में अपनी बहुआयामी बौद्धिक क्षमता का परिचय देते हुए संघ शक्ति को विस्तार प्रदान किया। यह श्री गुरूजी की ही प्रेरणा थी जिसने एक अभियंता उपाधि प्राप्त युवा को ऐश्वर्ययुक्त जीवन त्यागकर राष्ट्र के निमित्त सर्वस्व अर्पण करने के लिए प्रेरित किया। उनका बौद्धिक स्तर इतना उंचा था कि उन्होंने वेद-वेदांग, रामायण-महाभारत, गीतादि का स्वााध्याय कर स्वयं को इतना ज्ञान सम्पन्न कर दिया कि वह बहुसंख्यक हिन्दु समाज की अस्मिता, भारतीय संस्कृति और राष्ट्र धर्म के एक प्रखर व्याख्याता बन गये। संघशीर्ष ने उनकी इस विलक्षणता को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें सन् 1964 में स्थापित विश्व हिन्दु परिषद् से जोड़ दिया। इनके नेतृत्व में विश्व हिन्दु परिषद् ने न केवल अपने देश में अपितु विश्व भर में रहने वाले प्रवासी हिन्दुओं के हितों के संरक्षण का बीड़ा उठाया। अपने संगठन-कौशल से छद्म-धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदारों का असली चेहरा देश के सामने प्रकट किया।

स्व. श्री अशोक सिंहल में एक आध्यात्मिक उर्जा थी जिसके बल पर उन्होंने हिन्दुबहुल समाज का पुनर्जागरण किया। उनके नेतृत्व में देश-विदेश में आयोजित धर्म संसदों एवं विराट हिन्दु सम्मेलनों ने निश्चय से हिन्दुओं में आत्मगौरव और स्वाभिमान का भाव जगाया है। गौ-संवर्धन, सामाजिक-समरसता, अस्पृश्यता निवारण तथा वनवासी-कल्याण आदि विविध क्षेत्रों के लिए कारगर योजना बनाई। भगवान श्रीराम का मंदिर अयोध्या में रामजी के जन्मस्थान पर बने यह उनका स्वप्न ही नही अपितु इस कार्य के प्रति अटूट-प्रतिबद्धता भी थी। यह किसे विदित था कि 17 नवंबर को इस नश्वर शरीर को त्यागकर वह अमर हो जायेंगे। अमरात्मा स्व. अशोक सिंहल भले ही आज हमारे मध्य नहीं लेकिन उनकी प्रेरणा ज्योति से हिन्दू समाज प्रकाशित रहेगा। मातृवन्दना के इस अंक से हम स्व. अशोक सिंहल के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अब पछताय होत क्या!

एक बार पांच असमर्थ और अपंग लोग इकट्ठे हुए और कहने लगे, यदि भगवान् ने हमें समर्थ बनाया होता तो हम बहुत बड़ा परमार्थ करते। अंधे ने कहा- ''यदि मेरी आंखें होतीं तो जहां कहीं अनुपयुक्त देखता वहीं उसे सुधारने में लग जाता।'' लंगड़े ने कहा- ''पैर होते तो दौड़-दौड़ कर भलाई के काम करता।'' निर्बल ने कहा- ''बल होता तो अत्याचारियों को ठीक कर देता।'' निर्धन ने कहा- ''धनी होता तो दीन-दु:खियों के लिए सब कुछ लुटा देता।'' मूर्ख ने कहा- ''विद्वान् होता तो संसार में ज्ञान की गंगा बहा देता।''

वरूण देव उनकी बातें सुन रहे थे। उनकी सच्चाई परखने के लिए उन्होंने आशीर्वाद दिया और इन पांचों को उनकी इच्छित स्थिति मिल गई। पर परिस्थिति बदलते ही उनके विचार भी बदल गए। अन्धा सुन्दर वस्तुएं देखने में लगा रहता और इतने दिन की अतृप्ति बुझाता। लंगड़ा सैर-सपाटे के लिए निकल पड़ा। निर्धन धनी बन कर ठाठ-बाट के साधन जमा करने में लगा। निर्बल ने बलवान् होने के बाद दूसरों को आतंकित करना प्रारम्भ कर दिया। मूर्ख ने विद्वान् होकर अपनी चतुरता के बल पर जमाने को उल्लू बना दिया। बहुत दिन बाद वरूणदेव उधर से लौटे तो यह देखने के लिए रूक गए कि उन असमर्थों की प्रतिज्ञा पूरी हुई या नहीं। परंतु वे पांचों अपनी-अपनी स्वार्थ-सिद्धि में लगे मिले। वरूणदेव बहुत खिन्न हुए और अपने दिए हुए वरदान वापस ले लिए। वे सब फिर जैसे के तैसे हो गए। अब उन्हें अपनी पुरानी प्रतिज्ञाएं याद आईं और पछताने लगे कि पाए हुए सुअवसर को उन्होंने इस प्रकार प्रमाद में क्यों खो दिया। पर समय निकल चुका था, अब पछताने से बनता भी क्या?

निर्भय सत्पुरूष

राजा जनक की शोभायात्रा के लिए मिथिला नगरी के राजपथ को पथिकों से शून्य बनाने की प्रक्रिया में जब राजसेवकों ने अष्टावक्र महामुनि को हटने के लिए कहा तो उन्होंने हटने से इन्कार कर दिया और कहा- ''प्रजाजनों के आवश्यक कार्यों को रोककर अपनी सुविधा का प्रबन्ध करना राजा के लिए उचित नहीं है। अनीति करने वाले राजा को समझाना ऋषियों का कर्तव्य है। सो आप जाकर राजा तक मेरा संदेश पहुंचाएं। मैं हटूंगा नहीं, राजपथ पर ही चलूंगा।''

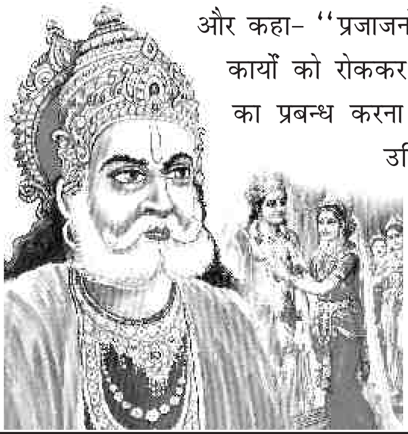

राज्याधिकारी कुपित होकर उन्हें बंदी बनाकर राजा के पास ले गए। जनक ने सारा वृत्तान्त सुना तो बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि जिस देश में ऐसे सत्पुरूष विद्यमान हैं जो राजा तक को प्रताड़ित कर सकें, वह देश धन्य है। नीति और न्याय के पक्ष में आवाज उठानेवाले सत्पुरूषों के द्वारा ही जनमानस की उत्कृष्टता स्थिर रह सकती है। ऐसे निर्भीक सत्पुरूष ही राष्ट्र की सच्ची सम्पत्ति हैं। उन्हें दण्ड नहीं, सम्मान दिया जाना चाहिए। राजा जनक ने अष्टावक्र जी से क्षमा मांगते हुए कहा- ''आपकी निर्भीकता ने हमें अपनी गलती समझने और सुधारने का अवसर दिया। आज से आप राजगुरू रहेंगे और इसी निर्भीकता से सदा न्याय-पक्ष का समर्थन करते रहने की कृपा करेंगे।''

सामाजिक समरसता व्यवहार की बात

– डॉ॰ सुवर्णा रावल

हम सब जानते हैं कि सामाजिक व्यवस्था में 'समता' यह एक श्रेष्ठ तत्व है। भारत के संविधान में इसे प्राथमिकता दी गयी है। समानतायुक्त समाज रचना, विषमता निर्मूलन इन विषयों पर काफी लिखा जाता है, चर्चा होती है और इसी का आधार लेकर समाज में भेद भी निर्माण किये जाते हैं। समता तत्व को लेकर स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में भगवान बुद्ध के उपदेश का आधार मिलता है। वे कहते हैं 'आजकल जनतंत्र और सभी मनुष्यों में समानता इन विषयों के संबंध में कुछ सुना जाता है, परंतु हम सब समान हैं यह किसी को कैसे पता चले? उसके लिए तीव्र बुद्धि तथा मूर्खतापूर्ण कल्पनाओं से मुक्त इस प्रकार का भेदी मन होना चाहिये। मन के उपर परतें जमाने वाली भ्रमपूर्ण कल्पनाओं का भेद कर अंत:स्थ शुद्ध तत्व तक उसे पहुंच जाना चाहिये। तब उसे पता चलेगा कि सभी प्रकार की पूर्ण रूप से परिपूर्ण शक्तियां ये पहले से ही उसमें हैं। दूसरे किसी से उसे वे मिलने वाली नहीं। उसे जब इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति प्राप्त होगी, तब उसी क्षण वह मुक्त होगा तथा वह समत्व प्राप्त करेगा। उसे इसकी भी अनुभूति मिलेगी कि दूसरा हर व्यक्ति ही उसी समान पूर्ण है तथा उसे अपने बंधुओं के उपर शारीरिक, मानसिक अथवा नैतिक किसी भी प्रकार का शासन चलाने की आवश्यकता नहीं। खुद से निचले स्तर का और कोई मनुष्य है इस कल्पना को तब वह त्याग देता है, तब ही वह समानता की भाषा का उच्चारण कर सकता है, तब तक नहीं।' (भगवान बुद्ध तथा उनका उपदेश स्वामी विवेकानन्द, पृष्ठ –28)

नि:सर्ग के इस महान तत्व का विस्मरण जब व्यवहारिक स्तर के मनुष्य जीवन में आता है तब समाज जीवन में भेदभाव युक्त समाज रचना अपनी जड़ पकड़ लेती है। समय रहते ही इस स्थिति का इलाज नहीं किया गया तो यही रूढ़ी के रूप में प्रतिस्थापित होती है। भारतीय समाज के साथ यही हुआ है। समता का यह सर्वश्रेष्ठ, सर्वमान्य तत्व हमने स्वीकार तो कर लिया, विचार बुद्धि के स्तर पर हमने मान्यता तो दे दी परंतु इसे व्यवहार में परिवर्तित करने में असफल रहे। 'समता' इस तत्व को सिद्ध और साध्य करने हेतु 'समरसता' यह व्यवहारिक तत्व प्रचलित करना जरूरी है। समरसता यह भावात्मक तत्व है और इसमें 'बंधुभाव' के तत्व को असाधारण महत्ता दी जाती है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर तो कहा करते थे, 'बंधुता यही स्वतन्त्रता तथा समता का आश्वासन है। स्वतंत्रता तथा समता की रक्षा कानून से नहीं होती।' 'समरसतापूर्वक व्यवहार से स्वातंत्रता, समता और बंधुता इन तीन तत्वों के साध्य तक हम पहुंच सकते हैं। दुर्भाग्य से इन तीन तत्वों के आधार पर हिंदू समाज की रचना नहीं हुई है। जिस समाज रचना में उच्च तत्व व्यवहार्य हो सकते हैं, वही समाज रचना सब में श्रेष्ठ है। जिस समाज रचना में वे व्यवहार्य नहीं हो सकते, उस समाज रचना को भंग कर उसके स्थान पर शीघ्र नयी रचना बनायी जाय' ऐसा स्वामी विवेकानन्द का मत था।

भारतवर्ष में समय-समय पर अनेक राष्ट्रपुरुषों ने जन्म लिया है। उन्होंने अपने जीवनकाल का सम्पूर्ण समय समाज की स्थिति को सुधारने में लगाया। राजा राममोहन राय से डा. बाबासाहब आंबेडकर तक सभी राष्ट्रपुरुषों का यही प्रयास रहा है। अधोगति के अंतिम पायदान पर पहुंची हुई सामाजिक स्थिति को सुधारने में अपना सारा जीवन व्यतीत किया है। सामाजिक मंथन, अपनी श्रेष्ठ इतिहास परंपरा जागृति हेतु राष्ट्रपुरुषों के जीवन कार्य का सत्य वर्णन समाज में लाना यह समरसता भाव जगाने हेतु उपयुक्त है। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा ज्योतिराव फुले, राजर्षि शाहू महाराज, डा. बाबासाहब आंबेडकर, नारायण गुरु आदि इनका योगदान अपार है। भारतवर्ष में संतों की भी लम्बी परंपरा रही है। सारे संतों ने भी समरसता भाव और व्यवहार हेतु अपार योगदान दिया है। इनके विचार समय-समय पर लोगों के सामने लाना यह एक समरसता प्रस्थापित करने हेतु उपयुक्त है।

आज अपने देश में समाज व्यवस्था का दृश्य क्या है? अभिजन वर्ग, बहुजन वर्ग, वंचित वर्ग, पिछड़ा वर्ग, घुमंतु समाज, वनवासी, महिला समाज, इन बहुजन वर्ग के अनेक अंगों पर विशेष ध्यान देना जरूरी है। सुदृढ़ समाज व्यवस्था की अपेक्षा करते समय इन दुर्बल कड़ियों पर ज्यादा ध्यान देना

. . . . . शेष पृष्ठ 30 पर

आवरण

करोड़ों लोगों के प्रेरणास्त्रोत

-डॉ. प्रवीण भाई तोगडिया,
अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, वि.हि.प

जब अशोक जी ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'हम सब मिलकर भव्य राम मंदिर बनाएंगे, हम सब मिलकर हिन्दू राष्ट्र का पुनरूत्थान करेंगे,' तब मैं 36 वर्ष का था। सन् 1992 में अयोध्या, गुजरात से विश्व हिन्दू परिषद के युवाओं के साथ गया था। अशोक जी के हाथ में ताकत थी, आत्मविश्वास उनकी आंखों में झलक रहा था। तब वे 66 वर्ष के थे। इसके कई वर्ष पहले से 10 वर्ष की आयु में ही मैं रा. स्व.संघ से जुड़ गया था। मैं ही नहीं, लाखों युवाओं को प्रेरणा देकर अशोक जी ने मां भारती की, हिन्दुओं की सेवा में तत्पर किया। भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर अयोध्या में रामजी के जन्म स्थान पर ही बने, यह उनका केवल स्वप्न नहीं था, यह उनका अदम्य विश्वास था, उनके जीवन की अटूट प्रतिबद्धता थी। दिन-रात उसी पर अशोक जी कार्य करते रहते थे। संघ के प्रचारक, स्वयंसेवक संगठनात्मक कुशलता सीखते हैं और कार्य, आंदोलन, सेवा इन सभी में नियोजन और अनुशासन ये सभी ऐसे व्यक्तित्व का अविभाज्य अंग होते हैं। अशोक जी भी ऐसे ही थे। आजकल ही नहीं, तब भी, जब टीवी, इंटरनेट, सोशल मीडिया का चलन नहीं था, यही होता था कि किसी बड़े कार्य करने वाले व्यक्तियों के विषय में संकुचित, अधूरी जानकारी के आधार पर या सरकारी दबाव में सकारात्मक कम और उल्टी-पुल्टी खबरें चलाकर उनकी छवि मलिन करने का काम चलता ही रहता था। अशोक जी इस सबसे कभी प्रभावित नहीं हुए। राम मंदिर के अतिरिक्त अशोक जी ने कई महान कार्य इस देश के लिए किए। 'धर्म संसद' की अनोखी संकल्पना अशोक जी ने विकसित की। देश-विदेश के साधु-संतों को राष्ट्र कल्याण और हिन्दू राष्ट्र के एक समर्थ सूत्र में एक करना कोई आसान काम नहीं था। अशोक जी ने धर्म संसद खड़ी की। आगे उसकी व्याप्ति और महत्व ऐसा बढ़ता गया कि अनेक विषयों पर धर्म संसद का एक शब्द, एक प्रस्ताव आदेशयुक्त दिशा का स्वरूप लेने लगा। अशोक जी ने एक बार मुझे कहा, 'इंग्लैंड में प्रधानमंत्री, अमरीका में

राष्ट्राध्यक्ष जब शपथ लेते हैं तब 'गॉड' के नाम पर लेते हैं और उस समय उनके पेरिस के फादर मंच पर या उनके साथ पोडियम के निकट उपस्थित होते हैं फिर भी विश्व में ये देश 'सेकुलर' कहलाते हैं। कभी हमारे देश में ऐसा होगा कि हमारा धर्म इस देश की राजनीति की दिशा तय करेगा और जब देश के प्रमुख शपथ लेंगे तब हमारे धर्म के प्रमुख उसी सम्मान से उनके साथ आशीर्वाद देते हुए होंगे? ऐसा होगा ही।' उनकी यही अदम्य आशा उनके लिए और इस देश के हिन्दुओं के लिए प्रेरणास्त्रोत थी। सरकार ने जब रामेश्वरम् में रामसेतु तोड़ने का प्रकल्प घोषित किया, तब अशोक जी को धक्का लगा था कि ऐसी दुष्टतापूर्ण योजना कोई बना ही कैसे सकता है! विश्व हिन्दू परिषद ने रामेश्वरम् में रामसेतु बचाने का देशव्यापी आंदोलन चलाया। सरकार को निर्णय बदलना पड़ा। उस शांतिपूर्ण आंदोलन के दौरान कई राज्य सरकारों ने पुलिस द्वारा कार्यकर्ताओं पर निर्मम लाठियों चलवायीं। इस कारण अशोक जी सरकारों पर बहुत कुपित हुए थे। अशोक जी अपने विचारों

पर कायम रहते थे और मनोबल बढ़ाते रहते थे। एक बुद्धिमान अभियंता का, जो जाने माने व्यवसायी परिवार से हो, उस समय देश के लिए सब कुछ त्यागकर निकलना, विशेषकर जब वे युवा थे, कोई आसान काम नहीं था। अशोक जी का दृढ़ संकल्प उनकी शक्ति थी जो आगे चलकर विश्व हिन्दू परिषद की प्रेरणा बनी। उनके कहने से दो-ढाई दशक पहले जब मैं अपनी अच्छी खासी कैंसर सर्जरी की प्रैक्टिस और परिवार-घर-अस्पताल छोड़कर निकला, तब मेरा पुत्र केवल 7 वर्ष का था। ऐसे अनेक युवाओं को अशोक जी ने प्रेरणा दी थीं सामाजिक समरसता से ही देश आगे बढ़ेगा यह अशोक जी का विश्वास था। छुआछूत मुक्त भारत का जो स्वप्न गुरू गोलवलकर जी, स्वामी चिन्मयानंद जी, श्री आप्टे जी आदि ने देखकर विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना सन् 1964 में की थी, उस स्वप्न को पूर्ण करने हेतु अशोक जी ने कई मंदिरों में सभी जातियों के प्रवेश का अभियान चलाया। उस समय यह बहुत कठिन था, लेकिन अनेक गांवों में जाकर अनेक लोगों से मिलना, बात करना ऐसे सभी अथक प्रयास अशोक जी करते रहे। सन् 1995 में कश्मीर में अलगाववादियों ने अमरनाथ यात्रा बंद करने की धमकी दी। अशोक जी के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद ने उस दहशत का मुकाबला किया। सन् 1992 के राम मंदिर आंदोलन के पश्चात् जब केन्द्र में नयी सरकार आई, तब अशोक जी आनंदित थे। उनके जीवन का स्वप्न पूर्ण होगा, अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनेगा ऐसी आशा लेकर उन्होंने देशभर में प्रवास किया। उसके पश्चात् जो हुआ ही नहीं उसके लिए उनके मन में दु:ख था, लेकिन वे कभी हारे नहीं। सभी का मनोबल बनाकर रखा और 2 वर्ष पहले उनकी वही आशा फिर से जग गई। उनकी वृद्ध आंखों में आशा की एक उज्जवल किरण चमकी और उस ऊर्जा ने उनके व्याधिग्रस्त वृद्ध शरीर में भी शक्ति भर दी। जब नई सरकार बन गई, इसी आशा से आज भी उनका हृदय सभी हिन्दुओं में धड़कता होगा। राह देखना अदम्य आशा का स्वभाव होता है। इस प्रयास में निराशा के झटके भी लगते हैं, किन्तु हम सभी का उत्तरदायित्व है कि अशोक जी का वह जीवनस्वप्न पूर्ण करें। हमारे करने के लिए अनेक कार्य हैं समाज में करोड़ों बच्चे, परिवार, अच्छे स्वास्थ्य और शिक्षा से वंचित हैं, उन्हें सुविधाएं प्राप्त करवाना, संस्कार और संस्कृत एवं वेद का सुलभ भाषा में प्रसार प्रचार करना इत्यादि। अशोक जी ने गोवंश बचाने हेतु देशभर में गोरथ आयोजित किए थे- उनका कार्य आगे ले जाना होगा। अविरल निर्मल गंगा हेतु एक दशक पहले ही अशोक जी ने नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद ने 'काशी से गंगा सागर' तक यात्रा निकाली थी जिसमें गंगा किनारे बसे गांवों के लोगों को गंगाजी को निर्मल रखने के उपाय समझाए गए थे। यह कार्य भी आज हम सभी की राह देख रहा है, और दुर्गावाहिनी पर भी आज दायित्व है कि सभी कार्यों को आगे ले जाएं। अशोक जी का शरीर आज भले हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा जागृत प्रेरणा की ज्योति उनके जैसे अदम्य आशा लेकर हर हिन्दू में प्रकाशित होती रहेगी। सन् 2020 में जब विश्व हिन्दू परिषद 55वीं वर्षगांठ मनाएगी, तब उनके सभी स्वप्न पूर्ण कर कई वर्ष आगे चल पड़ी होगी विश्व हिन्दू परिषद! चलें, हम सभी के प्रेरणा-स्त्रोत स्व. अशोक सिंहल को साष्टांग प्रणाम कर धर्मपथ पर आगे बढ़ें।❖

साभार: पाञ्चजन्य

> ***एक बुद्धिमान अभियंता का, जो जाने माने व्यवसायी परिवार से हो, उस समय देश के लिए सब कुछ त्यागकर निकलना, विशेषकर जब वे युवा थे, कोई आसान काम नहीं था। अशोक जी का दृढ़ संकल्प उनकी शक्ति थी जो आगे चलकर विश्व हिन्दू परिषद की प्रेरणा बनी। उनके कहने से दो-ढाई दशक पहले जब मैं अपनी अच्छी खासी कैंसर सर्जरी की प्रैक्टिस और परिवार-घर-अस्पताल छोड़कर निकला, तब मेरा पुत्र केवल 7 वर्ष का था। ऐसे अनेक युवाओं को अशोक जी ने प्रेरणा दी।***

कर्मयोगी महामानव

स्वामी सत्यमित्रानंद ने कहा कि 60 वर्ष की उम्र में ही अशोक जी को महात्मा कह देना चाहिए था। भारत में तमाम प्रकार की उपासनाएं हैं, दार्शनिक मार्ग हैं, लेकिन सब मार्गों के संत, महात्माओं, धर्माचार्यों को किसी एक मंच पर देश की, समाज की समस्याओं को हल करने के लिए जोड़ देने वाले व्यक्ति थे अशोक सिंहल जी। सभी जानते हैं कि वे जो ठान लेते थे वही करते थे। इसका अर्थ ये नहीं कि वे जिद्दी थे। वे संकल्प के धनी थे, वे आज्ञाकारी भी थे और धैर्यवान थे, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रतीक्षा करते रहना, लक्ष्य कभी भूलना नहीं- ये उनकी विशेषता थी। साथ ही साथ दया और करूणा का भाव उनमें बहुत अधिक था, छोटे बड़े का विचार नहीं था। उनकी सिक्योरिटी का पीएसओ, गाड़ी चलाने वाला चालक, उनकी सेवा करने वाला सेवक अगर उसके घर में कोई सुख-दु:ख है तो बिना किसी से कहे कार्यक्रम अपने आप बनाते थे और चल दते थे। उनको किसी ने निमंत्रण दिया, नहीं दिया इसका विचार दिमाग में नहीं रखते थे। उनको जानकारी मिलनी चाहिए- ये कार्यक्रम हो रहा है, बहुत महत्व का कार्यक्रम है बिना बुलाए पहुंच जाते थे। मान अपमान का विचार उनको छू तक नहीं सकता था। मुझे ऐसा लगता है कि वे अपने कमरे के सामने अपने देवता रखते थे।

अपने गुरू और परमपूज्य श्रीगुरूजी का चित्र रखते थे। कहते थे ये दो ही मेरे गुरू हैं। शायद वह सीधी प्रेरणा वहां से प्राप्त करते थे। इसीलिए उनके निर्णय हृदय से, आत्मा से लिए गए निर्णय होते थे। प्रथम दृष्ट्या तो यह लगता था कि यह कैसे होगा, ये क्या कह रहे हैं लेकिन उनका कहा हुआ हो भी जाता था। अंतत: सब कहते थे ये सही निकला। जब उनके पास केवल शाखा का ही काम था तो भी वे देश की तमाम समस्याओं पर बोलते और सोचते थे। विश्व हिन्दू परिषद में रहकर तो हमें स्पष्ट अनुभव हुआ कि उनकी सोच वैश्विक थी। हर समस्या के बारे में सुनते रहना, अध्ययन करते रहना, चर्चा करना और समाधान खोजते रहने की उनमें विलक्षण प्रतिभा थी, शायद भगवान ने ही उन्हें वह जन्मना दी थी। कानपुर में पता लग गया कि रेलगाड़ी से गाय ले जायी जा रही हैं, उन्होंने कार्यकर्ताओं को लेकर ताले तोड़ दिए, गायों को मुक्त कर दिया और वहां से आगे की यात्रा पर निकले तो किसी की पकड़ में नहीं आए। दिल्ली का झंडेवालान मंदिर अराजक तत्वों के हाथ में था, श्रद्धालुओं की भावना का सम्मान करते हुए मार-मारकर उन्हें वहां से खदेड़ दिया। आज वह मंदिर बहुत ही प्रतिष्ठित है, सबके सामने है लेकिन उनकी व्यक्तिगत लिप्सा कभी उस मंदिर से नहीं रही। वेदों का पुनरूद्धार होना चाहिए, उत्तर भारत में वेदपाठ को कंठस्थ करने की परंपरा का बीज उन्होंने धरती पर डाला और आज वह जम गया। देश के माथे से गुलामी के कलंक हटने चाहिए, बच्चे-बच्चे के मन में एक ललक जगा दी। सन् 1526 में हमारा अपमान हुआ था उसका परिमार्जन करने की प्रबल भावना जन-जन में जगा दी। देश के हर नौजवान में अपने पावन स्थल को मुक्त करने की चेतना जग गई, देश में हजारों मंदिर तोड़े गए थे, सभी के प्रति ऐसा भाव जग गया। कभी वंदेमातरम् और भारत माता की जय के नारे हमारी स्वाधीनता की पहचान थे, वे आज भी याद किए जाते हैं। जय श्रीराम हमारे यहां पहले भी बोलते थे लेकिन 'जय श्रीराम' के नारे में वीरत्व भर दिया।

अशोक जी तो शायद पढ़ने के बाद ही साधु जीवन की ओर, संन्यास लेने जा रहे थे लेकिन किसी शक्ति ने ही उन्हें प्रेरणा दी कि भारतमाता की यह दशा है तुम कहां जा रहे हो। फिर उसी प्रेरणा से उन्होंने संतों में जागरूकता पैदा की। जो संत केवल भजन करने में ही व्यस्त रहते हैं उन्हें समाज, देश और समस्याओं में भी रूचि लेनी चाहिए। हर आदमी को वैभव अच्छा लगता है वे तो वैभव छोड़कर घर से आए थे। घर के वैभव के बाद उन्हें किसी ने क्या खिलाया, कहां बिठाया, इस पर उन्होंने कोई विचार नहीं किया। मैं तो समझता हूं भगवान की कोई विशेष शक्ति अशोक जी में अवतरित हुई थी, इसी उद्देश्य के लिए उनका जन्म हुआ

था। मैंने एक बार उनसे कहा कि कुछ आराम कर लिया कीजिए तो कहने लगे कि प.पू. श्रीगुरूजी ने एक बार कहा था कि आराम तो चिता पर ही होता है। वास्तव में अशोक जी ने श्रीगुरूजी के शब्दों को सार्थक किया। 10 नवंबर को परम पूजनीय सरसंघचालक जी से उन्होंने अपने मन की बात की। अंतिम समय में अस्पताल में भी लोगों को बुला-बुलाकर वे बातें करते रहे। हंसी मजाक नहीं करते थे देश की बात करते थे। 14 नवंबर के बाद उनकी वाणी बंद हो गई। उनको वेंटिलेटर लग गया, किडनी का फंक्शन घटने लगा। 17 नवंबर को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उनकी सांस बंद हो गई। अर्थात् कुल मिलाकर साढ़े तीन दिन उन्होंने अपने जीवन में आराम किया। इससे पहले कभी उन्होंने बीमारी में भी आराम नहीं किया, ऐसे विरले ही कर्मयोगी होते हैं। ऐसे महान कर्मयोगी को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। **साभार: पाञ्चजन्य**

विशिष्ट व्यक्तियों की नजर में अशोक जी

* स्व. श्री अशोक सिंहल का संपूर्ण जीवन देश की सेवा करने पर केन्द्रित था। हमारा सौभाग्य है कि श्री अशोक जी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन हमें मिला। उनके परिवार एवं अनगिनत समर्थकों के प्रति मेरी संवेदनाएं।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

* वे सदैव हिन्दू समाज की सेवा में तल्लीन रहे। ऐसा कौन महापुरूष होगा जो अशोक जी का स्थान लेकर राम जन्मभूमि आन्दोलन को आगे बढ़ाएगा और भगवान राम का भव्य मंदिर बनवाएगा। केन्द्रीय शासन से विशेष आग्रह है कि राम मंदिर का निर्माण ही अशोक जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वासुदेवानंद जी महाराज, शंकराचार्य

* अशोक सिंहल हिन्दुत्व के स्वाभिमान थे। उन्होंने संपूर्ण विश्व में हिन्दुत्व की अलख जगाई।

डॉ. रामविलास वेदान्ती,
रामजन्मभूमि न्यास के सदस्य

* अशोक जी एक व्यक्ति नहीं बल्कि स्वयं में एक संस्था थे। उनके अंदर का संकल्प बल, त्याग हमारे विचार में एक अमर प्रेरणा का कार्य करेगा।

गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद

* श्रद्धेय अशोक सिंहल जी हिन्दुत्व के पुरोधा, हिन्दू जगत के स्वाभिमान एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदर्श स्वयंसेवक एवं प्रचारक के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

डॉ. बजरंगलाल गुप्त, उत्तर क्षेत्र संघचालक

* अशोक सिंहल जी का इस दुनिया से प्रस्थान एक युग का अन्त है। श्रीरामजन्मभूमि के लिए उनका संघर्ष समाज को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

डॉ. निर्मल सिंह, उपमुख्यमंत्री, जम्मू कश्मीर

* विश्व के संपूर्ण हिन्दू समाज के लिए वे मार्गदर्शक थे और अंतिम क्षेण त कवे क्रियाशील थे। उनके कण-कण में धर्म भरा हुआ था। उनके चरणों में शत-शत नमन।

श्री भागय्या, सहसरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

* स्व. श्री अशोक सिंहल के निधन से पूरे देश ने एक ज्वलंत व्यक्तित्व को खो दिया है। हिन्दुत्व की अविचल धारा आज स्तब्ध हो गई है।

श्रीपाद नाईक, केन्द्रीय आयुष मंत्री

* विश्व हिन्दू परिषद के संरक्षक एवं संपूर्ण नेपाली जनता से सुपरिचित विराट व्यक्तित्व को नेपाली जनता की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित है।

दीप उपाध्याय, राजदूत, नेपाल

* उनके जाने से मुझे लगता है कि मेरा व्यक्तिगत नुकसान हुआ है और एक पितातुल्य जो छाया थी वह हट गई।

रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

* अशोक जी महान थे। उनके विराट व्यक्तित्व को शब्दों में नहीं व्यक्त किया जा सकता।

पद्मनाभ आचार्य, राज्यपाल, नागालैंड

* स्व. श्री अशोक सिंहल ने राम जन्मभूमि के आंदोलन को तीव्र गति से आगे बढ़ाकर संपूर्ण हिन्दुओं में चेतना जगाने का अतुलनीय कार्य किया।

मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

* उनकी प्रेरणा से सैकड़ों युवाओं ने भी राष्ट्रहित के कार्य में स्वयं को समर्पित किया है।

श्रीहरि बोरिकर, राष्ट्रीय महामंत्री, अभाविप

* अशोक जी के राष्ट्र सेविका समिति से प्रारम्भ से ही आत्मीय संबंध थे। देशभर की समिति सेविकाएं उस चिन्मय प्रकाश को, जो चिन्मय सत्ता में विलीन हो गया है, अश्रुपूरित नेत्रों से भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करती हैं।

शांतक्का, प्रमुख संचालिका, राष्ट्र सेविका समिति

साभार: पाञ्चजन्य

हि.प्र. हाई कोर्ट में अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद् ने मनाया संविधान दिवस

26 नवम्बर संविधान दिवस के उपलक्ष्य में हि.प्र. उच्च न्यायालय में अधिवक्ता परिषद हिमाचल प्रदेश की ओर से न्याय दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता हि.प्र. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति धर्मचन्द चौधरी रहे। कार्यक्रम मुख्य अतिथि न्यायधीश पी. सी. राणा, विशिष्ट अतिथि न्यायाधीश सुरेश्वर ठाकुर रहे। परिषद के प्रदेश अध्यक्ष सेवानि. सत्र न्यायाधीश श्री वीरेन्द्र सिंह वर्मा तथा हि.प्र. हाई कोर्ट के परिषद के अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता तारा सिंह चौहान ने मंचस्थ महानुभावों का परिचय कराया। हिमाचल हाई कोर्ट बार एसोशिएसन के अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता श्री के. सी. बनियाल ने न्याय दिवस मनाने के विषय की जानकारी उपस्थित अधिवक्ताओं एवं गणमान्यों को दी। अधिवक्ता परिषद के राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य वरिष्ठ अधिवक्ता श्री विवेक ठाकुर द्वारा न्याय दिवस के विषय में दी गई विषय की जानकारी से उपस्थित जनसमुदाय का मन मोह लिया। उन्होंने न्याय धर्म की परिधि में रहकर हो और संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों से छेड़छाड़ न हो इस पर अपना पक्ष रखा। भारत सरकार के सहायक सॉलिसिटर जनरल वरिष्ठ अधिवक्ता श्री अशोक शर्मा के द्वारा प्राचीन एवं नवीन न्याय व्यवस्था के बारे में सटीक जानकारी देकर अपना मजबूत पक्ष रखा। न्यायधीश सुरेश्वर ठाकुर ने भी न्याय व्यवस्था के विषय में उपस्थित जनसमुदाय की जानकारी का अभिवर्धन किया गया। अपने सारगर्भित उद्बोधन में न्यायाधीष न्यायमूर्ति श्री धर्मचन्द चौहान ने अधिवक्ता परिषद को संविधान दिवस को न्याय दिवस के रूप में मनाने के शुभकामना भी दीं एवं संविधान की सार्थकता व वर्तमान परिपेक्ष्य में उसके क्रियान्वयन के पक्ष पर बल दिया।

कार्यक्रम में मंच संचालन परिषद के उपाध्यक्ष श्री शर्मा एवं आए हुए अतिथियों का स्वागत परिषद सचिव अधिवक्ता श्रीमती अंजलि शर्मा ने किया। कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के महाधिवक्ता श्री श्रवण डोगरा, लॉ सचिव व अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं बार काउंसिल हि.प्र. हाई कोर्ट के सदस्य, अन्य वरिष्ठ अधिवक्ता एवं शिमला के गणमान्य उपस्थित रहे। ❖

गुलामी के प्रतीक बदले सरकार -विहिप

विश्व हिन्दू परिषद हिमाचल प्रदेश ने प्रदेश सरकार से कहा की प्रदेश सरकार कोई भी हिन्दू हित का कार्य करने में चाहे गो-संरक्षण का विषय हो, धर्मान्तरण को रोकने के ठोस कानून बनाने की बात हो या सरकार द्वारा अधिग्रहीत मंदिरों की मुक्ति का हो उक्त विषयों पर प्रदेश सरकार देरी कर रही है। उक्त बात विश्व हिन्दू परिषद् के प्रदेश संगठन मंत्री मनोज कुमार ने शिमला से प्रैस को भेजे गये एक वक्तव्य में कही।

विश्व हिन्दू परिषद हिमाचल प्रदेश में हिमाचल के खोए हुए अस्तित्व को वापिस लाने की मुहिम में प्रयासरत है। देश की आजादी के लगभग सात दशक बीत जाने के बाद भी प्रदेश सरकारें गुलामी के प्रतीकों के नाम बदलने में असमर्थ दिख रही हैं। पीटर हॉफ(शिमला) का नाम बदल कर मेघदूत माननीय शांता कुमार ने रखा था जब वह प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि उनके बाद की सरकारों ने इसका नाम फिर से पीटर हॉफ रख दिया।

विश्व हिन्दू परिषद् का मत है कि हिमाचल में

गुलामी के प्रतीक जैसे पीटर हॉफ, रिज मैदान (शिमला), डलहौजी, नूरपुर, लिटेन मैमोरियल गेट(नाहन), आदि ऐसे सभी गुलामी के प्रतीकों के नाम बदल कर स्वतन्त्रता सेनानियों के नाम से रखे जाने चाहिए। जब भारत स्वतन्त्र हुआ था उस समय अनेक स्थानों के नाम बदल कर महाराणा, शिवाजी, भामाशाह, महात्मा गाँधी के नामों से रखे गए, जैसे मिंटो ब्रिज (दिल्ली) का नाम बदल कर शिवाजी ब्रिज तथा अनेक मार्गों, तथा पार्कों के नाम बदल कर भारत के वीर योद्धाओं तथा स्वतन्त्रता सेनानियों के नाम से रखे गए। उन्होंने कहा कि जब भी कोई देश स्वतन्त्र होता है तो सबसे पहले वह गुलामी के प्रतीकों को मिटाता है, परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि आजादी के सात दशक बीत जाने के बाद भी हम गुलामी के प्रतीको को ढो रहे हैं, और गुलामी के कंलक की यह मीनारें आज भी उसी नाम से खड़ी हैं। हमारी माँग है कि पीटर हॉफ का नाम बदल कर महर्षि वाल्मिकी सदन रखा जाए, डलहौजी का नाम भाई ह्दया राम के नाम से रखा जाए जिनका स्वतन्त्रता की लड़ाई में विशेष योगदान रहा है। नूरपुर का नाम भारत के प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी वीर राम सिंह के नाम रखा जाना चाहिए, रिज मैदान (शिमला) का नाम बदल कर संत सत्यानंद स्टोक्स के नाम रखा जाना चाहिए, जो भारत में आए तो ईसाई धर्म का प्रचार करने पर श्रीमद्भगवदगीता से प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लिया उनकी आगे की पीढ़ियां आज भी हिन्दू हैं। नाहन के लिंटन मैमोरियल गेट का नाम बदलकर सिरमौर के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी सूरज सिंह के नाम से रखा जाना चाहिए, इन नामों से हिमाचल का गौरवमयी इतिहास झलकता है।

महर्षि वाल्मिकी को छोड़कर सभी नाम हिमाचल के वीरों के हैं जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए विशेष योगदान दिया। मनोज कुमार ने कहा की जो देश और लोग अपने पूर्वजों को भूल जाते हैं, वह देश समाप्त हो जाते हैं। हमारी प्रदेश के मुख्यमंत्री जो स्वयं राज परिवार से हैं, माँग है कि वह विधान सभा में एक प्रस्ताव पारित करवाकर गुलामी के इन प्रतीकों के नाम बदलकर हिमाचल के उन वीर पुरूषों के नाम से रखवाऐं जिन्होनें देश की सेवा की है। हमारा सभी राजनीतिक दलों के चुने हुए प्रतिनिधियों से भी आग्रह है कि उक्त विषय पर वह भी अपना श्वेत पत्र जारी करें।

आज जो लोग अग्रेंजों की मजारों को साफ कर रहे हैं, वह यह बात भूल गए कि हमारे देश को चार सौ वर्षों तक इन्हीं लोगों ने गुलाम बनाए रखा। बाबर की कब्र अफगानिस्तान में है, वर्तमान में अफगानिस्तान में मुस्लमानों की हुकुमत है, लेकिन वहां के लोगों ने आज तक बाबर का कोई मकबरा नहीं बननाया, उनका मानना है कि बाबर उनका कोई पूर्वज या सेनानायक नहीं था वह केवल एक लुटेरा और अक्रान्ता था।

हिमाचल प्रदेश सरकारों की ऐसी क्या मजबूरी है कि वह गुलामी की इन दास्तानों के नाम नही बदल सकती?❖

अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत

अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत हि.प्र. का द्वितीय प्रान्तीय वार्षिक सम्मेलन सोलन के भवन में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में ग्राहक पंचायत के अखिल भारतीय सचिव श्री दिनकर सबणवीश, श्री अशोक त्रिवेदी विशेष रूप से उपस्थित रहे। सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश से 80 कार्यकर्ताओं ने उपस्थिति दर्ज की। वर्ष भर की योजनाओं की समीक्षा की गई तथा आगामी वर्ष की योजना भी प्रस्तुत हुई। प्रदेश संगठन मंत्री नरेश चौहान ने सभी का स्वागत किया तथा प्रदेशाध्यक्ष डॉ॰ अनिल वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में ग्राहक पंचायत के प्रदेश सचिव रमन प्रिम्टा सहित अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।❖

स्वामी विवेकानन्द का कवि रूप

आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि स्वामी विवेकानन्द वैदिक धर्म एवं संस्कृति के समस्त स्वरूपों के उज्जवल प्रतीक थे। विश्व के धार्मिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक एवं साहित्यिक इतिहास में भी स्वामी विवेकानन्द के प्रतिनिधित्व में भारत ने बहुत उच्च स्थान प्राप्त किया। स्वामी जी की विचारधारा ने भारत के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। आज के वैज्ञानिक युग में जिन समस्याओं से हम जूझ रहे हैं, स्वामीजी को उनका आभास उसी समय हो गया था। बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी विवेकानन्द एक उच्च कोटि के दार्शनिक तो थे ही, साथ ही वे अद्‌भुत काव्य प्रतिभा के भी धनी थे। स्वामी जी का व्यक्तित्व अनेकानेक गुणों के आच्छादित होने के कारण भले ही अपना कवि रूप पूरी तरह न दर्शा पाया हो किन्तु उनकी रचनाएं किसी भी दशा में प्रभावित करने का सामर्थ्य रखती हैं। स्वामी जी कविता का मूल प्रस्तवण कोई दैवी प्रेरणा मालूम पड़ती है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में आध्यात्मिकता की छाया दिखाई देती है। 'समाधि', 'सखा के प्रति', 'गाता हूं गीता मैं तुम्हें सुनाने को', 'काली माता', 'नाचे उस पर श्यामा' एवं 'सागर के वक्ष पर' आदि युवा सन्यासी की भावयुक्त एवं हृदय ग्राह्य कविताएं हैं। स्वामी जी की इन रचनाओं का हिन्दी अनुवाद हिन्दी के महाप्राण पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने किया है। अपनी मूल भाषा में यह रचनाएं जितनी प्रभावी हैं सम्भवतया उससे अधिक ग्राह्य रूप इनको निराला ने हिन्दी में लाकर प्रदान किया है। 'सखा के प्रति' नामक रचना के माध्यम से निराशाजनक समाज का चित्रण स्वामी जी ने इस प्रकार किया है-

स्वास्थ्य रोग में, दु:ख में सुख है,
अन्धकार में जहां प्रकाश,
शिशु के प्राणों का साक्षी है
रोदन, जहां वहां क्या आस।

अर्थात जहां रोना ही शिशु के जीवन का प्रमाणस्वरूप है, वहां बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी सुख की आशा नहीं करता है। इसी क्रम में सन्यासी स्वामी प्रेम की खोज कुछ इस प्रकार करते हैं-

तंत्र, मंत्र नियमन प्राणों का,
मत अनेक, दर्शन विज्ञान,
त्याग, भोग, भ्रम-घोर बुद्धि का,
'प्रेम-प्रेम' धन लो पहचान।

स्वामी विवेकानन्द का आध्यात्म जीव-प्रेम में ही ईश्वर का प्रतिबिम्ब देखता है-

बहुरूपों से खड़े तुम्हारे आगे,
और कहां है ईश?
व्यर्थ खोज। यह जीव-प्रेम
की ही सेवा पाते जगदीश।

'नाचे उस पर श्यामा' नामक रचना के माध्यम से यथाक्रम कोमल और कठोर भावों का बड़ी प्रांजल भाषा में वर्णन किया गया है-

चण्ड दिवाकर ही तो भरता
शशधर में कर-कोमल प्राण।
किन्तु कलाधर को ही देता
सारा विश्व प्रेम सम्मान।।

अर्थात् चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशमान होता है लेकिन सूर्य की अपेक्षा चन्द्र ही सबको अधिक प्रिय है, क्योंकि उसमें शीतलता है, कोमल भाव है। इसी क्रम में आगे श्यामा माँ (काली जी) का मुण्डमालाधारी रूप देखकर लिखते हैं-

तुझे मुण्डमाला पहनाते,
फिर भय खाते तकते लोग।
'दयामयी' कह कह चिल्लाते,
माँ दुनियां का देखा ढोंग।

स्वामी जी की 'सन्यासी का गीत' नामक रचना की पंक्तियां देश की गुलामी की व्यथा कहती हैं-

आदर गुलाम पाये
या कोड़ों की मार खाये।
वह सदा गुलाम रहेगा
कालिख का तिलक लगाए।

और इसी गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिए युवाओं से किए गए आह्वान का भाव इन पंक्तियों से होता है-

जागो वीर! सदा ही सिर पर
काट रहा है चक्कर काल।
छोड़ो अपने-सपने, भय क्यों?
काटो-काटो यह भ्रम-जाल

ये तो कुछ ही पंक्तियां हैं स्वामी जी की रचनाओं की। किन्तु वास्तव में स्वामी जी की कविताओं, पत्रों, भाषणों और संस्मरण आदि को पढ़कर भारतभूमि के भाग्य पर गर्व होता है जिसने स्वामी विवेकानन्द जैसे सर्वतोन्मुखी व्यक्तित्व को जन्म दिया है।

अब घायलों की मदद करने पर मिलेगा सम्मान

अब लोग सड़क दुर्घटनाओं में घायलों की मदद आसानी से कर सकते हैं। लोगों को घायलों की मदद करने और उन्हें अस्पताल तक पहुंचाने के बाद किसी भी प्रकार की पुलिस कार्रवाई और पूछताछ के झमेले से छुटकारा मिल गया है। लोग घायल को अस्पताल तक पहुंचाने के बाद अस्पताल से तुरन्त जा सकेंगे। मददगार लोग अपनी इच्छा के अनुरूप ही प्रत्यक्ष गवाह बनना चाहते हैं तो बन सकते हैं। यही नहीं, घायलों की मदद को आगे आने वाले लोगों को सरकार की ओर से सम्मानित भी किया जाएगा। इसके लिए सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के बाद केंद्र सरकार ने प्रदेश सरकार और स्वास्यि विभाग को निर्देश जारी किए हैं। केंद्र सरकार की ओर से इस संबंध में निर्देश मिलने पर प्रदेश सरकार ने भी सभी निजी और सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों को निर्देश जारी किए हैं। पुलिस विभाग को भी अवगत करवा दिया गया है। हालांकि जब भी कोई व्यक्ति किसी दुर्घटना के दौरान घायल व्यक्ति को उपचार के लिए अस्पताल लाता है तो उसे पूरी कार्रवाई तक वापस नहीं भेजा जाता है। ऐसे में मददगार का समय तो बर्बाद होता ही है, वहीं उसे कई परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। इसके चलते कई लोग ऐसे मामलों में काफी लंबा पचड़ा पड़ने के चलते लोगों को मदद करने के लिए आगे नहीं आते हैं, जिससे कई घायल समय पर अस्पताल न पहुंचने पर काल का ग्रास बन जाते हैं। लोगों की जिंदगी बचाने और घायलों को जल्द ही अस्पताल में उचपार हो इसी संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश जारी किए हैं।

साभार: दिव्य हिमाचल

देश में असहिष्णुता का माहौल नहीं: जस्टिस ठाकुर

उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश टी.सी ठाकुर ने आज कहा है कि देश में असहिष्णुता का माहौल नहीं है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक लाभ के लिए कुछ लोगों ने इस संबंध में भ्रम फैलाया है। जस्टिस ठाकुर ने कहा कि देश में हर व्यक्ति के अधिकार सुरक्षित हैं। जस्टिस ठाकुर ने यहां मीडिया कर्मियों के साथ चाय पर चर्चा के दौरान कहा कि असहिष्णुता राजनीतिक दलों के लिए महत्वपूर्ण विषय हो सकता है लेकिन लोगों को डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि उच्चतम न्यायालय कानून के शासन के लिए मौजूद है जो कानून को बरकरार रखने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय का काम संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करना है और देश में जब तक कोर्ट है कानून का शासद मौजूद रहेगा। गत 3 दिसम्बर को मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ लेने के बाद जस्टिस ठाकुर की मीडिया कर्मियों से यह पहली बातचीत है। उन्होंने कहा कि पुरस्कारों की वापसी राजनीतिक मकसद से की गई है।

साभार: पंजाब केसरी

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना
हिमाचल प्रदेश

सभी भक्तों को लोहड़ी,
मकर सक्रांति, गुरू गोविन्द सिंह
जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

इंदौर में चित्रभारती फिल्मोत्सव 26 से 28 फरवरी, 2016 तक

इंदौर में 26 से 28 फरवरी, 2016 तक चित्रभारती फिल्मोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस फिल्मोत्सव का आयोजन भैयाजी दाणी सेवा न्यास तथा इंदौर का देवी अहिल्या विश्वविद्यालय सह आयोजक है। गत् 06 दिसंम्बर को इंदौर में चित्र भारती फिल्मोत्सव के कार्यालय का शुभारम्भ तथा वेबसाइट का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रा. स्व. संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख जे.नंदकुमार जी थे। उनके साथ कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के कुलपति डॉ. आशुतोष मिश्रा, आयोजन समिति के प्रमुख सिने विजन के सचिव सीए राकेश मित्तल उपस्थित रहे।

इस अवसर पर श्री जे.नंदकुमार ने कहा कि कला व्यक्ति को मुक्त करती है। कला संस्कृति अन्त:दृष्टि से निर्मित हुई है। संस्कृति व कला का प्रारंभ हमारे पूर्वजों ने बाहरी इंद्रियों से देखने की बजाय स्वयं के भीतर देखकर खोजकर किया है। हमारी इसी गौरवशाली संस्कृति के दृष्टिकोण के आधार पर चलचित्रों का सृजन हो भी रहा है। ऐसी दिशा देने व कलाकारों को मंच देने नवीन सृजन हो, इसलिए चित्रभारती फिल्मोत्सव का आयोजन हो रहा है।

फिल्मोत्सव में प्रदर्शित की जाने वाली फिल्मों की विषयवस्तु राष्ट्रीय विचार, रचनात्मक कार्य, पर्यावरण, पारिवारिक मूल्य आदि रहेंगी। इसमें चार प्रकार के चलचित्रों का प्रदर्शन एवं स्पर्धाएं होंगी–

1. लघु चलचित्र (Short Film) 10 मिनट
2. वृतचित्र (Documentary) 10 मिनट
3. कैम्पस फिल्म (Campus Film) 5 मिनट
4. एनिमेशन फिल्म (Animation Film)5 मिनट

इस फिल्मोत्सव की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए तथा रजिस्ट्रेशन करवाने के लिए **http://www.chitrabharatifilmfest.com** वेबसाइट पर संपर्क करें। अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर **संपर्क करें**–

चित्र भारती फिल्मोत्सव समिति
भाग्यशाली 162, तिलक पथ, भूतल,
मलहारआश्रम के सामने, रामबाग, इंदौर (म.प्र.)– 452007
मोबाइल–098263 63202

सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय

हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला–171009

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त

(संचालित हिमाचल शिक्षा समिति–सम्बद्ध विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान)

प्रवेश प्रारम्भ

सत्र 2016–17

- कक्षा नर्सरी से नवम् तक और 10+1 (विज्ञान संकाय) कक्षा 6वीं से 12वीं तक छात्रावास सुविधा उपलब्ध (केवल लड़कों के लिए)
- कक्षा 9वीं और 10+1 तथा छात्रावास के लिए प्रवेश परीक्षा 18 फरवरी, 2016 को होगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

प्रधानाचार्य, स.वि.म.व.मा.वि.

हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला–9

दूरभाष: 0177-2622308, मो.: 94180-18527, 94182-76324

अणु डाक: svmhimrashmi@gmail.com

वेब साईट: www.svmhemrashmi.org

महाकाल मंदिर की महिमा

बैजनाथ से करीब 5 किलोमीटर की दूरी पर महाकाल मंदिर अपने गर्भ में कई रहस्यों को समेटे हुए है। मान्यता है कि भगवान शिव के तेज से प्रकट हुआ स्वयं भू शिवलिंग अपने आप में रहस्यमयी है। यहां शिवलिंग पर चढ़ने वाला पानी या दूध कहीं भी बाहर नहीं निकलता है। जिसको लेकर आज तक कई महात्मा व मंदिर के पुजारी इस पर कोशिशें कर चुके हैं लेकिन आज तक पता नहीं चल पाया है कि शिवलिंग पर चढ़ाया पानी या दूध जाता कहां है। बताया जाता है कि यहां पर सप्त ऋषियों के कुल्लू प्रवास के समय यहां 7 कुंडों की स्थापना की थी। जिसमें 4 कुंड ब्रह्म कुंड, विष्णु कुंड, शिव कुंड व सत्ती कुंड आज भी मंदिर में मौजूद हैं जबकि 3 कुंड लक्ष्मी, कुंती व सूर्य कुंड मंदिर परिसर के बाहर हैं। मंदिर के पुहारी राम प्रसाद ने बताया कि किंवदंती है कि अज्ञात वास के दौरान महाकाल मंदिर का निर्माण पांडवों द्वारा किया गया था। इसके बाद पांडवों ने अपनी माता कुंती के साथ यहां महाकाल की आराधना की थी। इसके अलावा यह मंदिर अघोरी साधना व तंत्र विद्या का केन्द्र माना जाता है उन्होंने बताया कि मंदिर में महाकाल के रूप में साक्षात भगवान शिव पिंडी के रूप में विराजमान हैं जबकि उनके साथ यहां अपरोक्ष रूप में महाकाली का वास है। पुजारी ने बताया कि पूर्व समय में किसी दिन अगर महाकाल में कोई शव जलने नहीं आता था तो घास का पुतला जलाया जाता था। उन्होंने बताया कि वर्ष 1905 में आए भीषण भूकंप में मंदिर का आधा भाग ढह गया था जिसके बाद आधे भाग को दोबारा बनाया गया है।

शिव कुंड के पानी से होता है महाकाल का जलाभिषेक: राम प्रसाद

मंदिर के पुजारी राम प्रसाद शर्मा ने बताया कि ब्रह्म कुंड का पानी पीने के लिए प्रयोग होता है। शिव कुंड के पानी का प्रयोग महाकाल के अभिषेक व नहाने के लिए किया जाता है लेकिन सती कुंड के पानी का प्रयोग नहीं किया जाता है मान्यता है कि किसी समय में यहां राजा के वंशज की 3 महारानियां सती हुई थीं।

मां दुर्गा के मंदिर की स्थापना मंडी के तत्कालीन राजा सुषैन ने करीब 450 वर्ष पूर्व की थी। उस समय राजा के इकलौते बेटे के निधन के बाद राजा ने मां दुर्गा की मूर्ति की स्थापना करने से इंकार कर दिया। इसके बाद जिस किसी ने भी मूर्ति की स्थापना करनी चाही, उसके परिवार के साथ कोई न कोई हादसा घटित होता रहा। इसके बाद वर्ष 1982 में स्वामी रामानंद ने मां दुर्गा की मूर्ति की स्थापना की। भारत में केवल दो शनि के मंदिर हैं। पहला उज्जैन में है तो दूसरा बैजनाथ के समीप महाकाल में। मान्यता है कि यहां शनि प्रतिमा पर तिल, मास व कड़वा तेल चढ़ाने से नवग्रह की शांति मिलती है। इसके अलावा यहां भाद्रपद मास में शनिवार के मेले भी लगते हैं, जिसमें 50 हजार से 1 लाख तक श्रद्धालु देश भर के कोने-कोन से यहां दर्शनों के लिए आते हैं। ❖

आभूषण और औजार बनाने में दक्ष थे किन्नौर-लाहौल के लोग

सैकड़ों साल पहले भी किन्नौर और लाहौल के लोग धातु ढालने में उतने ही दक्ष थे जितने आज लोग मशीनी युग में हैं। बिना मशीनों के वहां के बने आभूषणों की कारीगरी देखकर इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। धातु ढालने की वहां की तकनीक कमाल की रही है। गेयटी के टेवरन हाल में लगी प्रदर्शनी में रखे प्राचीन आभूषणों और औजारों को देखकर इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। भाषा एवं संस्कृति विभाग और राष्ट्रीय पांडुलिपि संरक्षण केंद्र शिमला के सौजन्य से आयोजित विश्व धरोहर सप्ताह के तहत प्रदर्शनी में हिमाचल के स्मारकों और सांस्कृतिक स्थलों का विवरण प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में राज्य संग्रहालय के सौजन्य से किन्नौर और लाहौल स्पीति जिला में किये गये पुरातात्विक अन्वेषण को दर्शाया है। प्रदर्शनी में रखे आभूषण लोगों के आकर्षण का केंद्र बने रहे। इस क्षेत्र में मिले मनके और आभूषणों से जाहिर है कि धातु ढालने की तकनीक यहां अति उत्कृष्ट रही है। सीपियों का आभूषणों और अन्य प्रसाधनों में उपयोग दर्शाता है कि इस क्षेत्र का समुद्री क्षेत्र के साथ व्यापारिक संबंध रहा होगा। ❖

साभार: अमर उजाला

शिमला में स्थापित उत्तर भारत का दूसरा सबसे ऊँचा तिरंगा

शिमला शहर के सौंदर्यीकरण की मुहिम में उत्तर भारत का दूसरा सबसे ऊँचा तिरंगा झंडा मुख्यमंत्री वीरभद्र स्थापित किया गया। यह अपनी तरह का राज्य में तीसरा तिरंगा लगाया गया है। इस से पहले डलहॉजी और कुल्लू में तिरंगे झंडे स्थापित किए गए हैं। सेना की बैंड स्क्वैड ने मधुर देश भक्ति गीतों की लहरी से उपस्थित जनता का मन मोह लिया। उपस्थित लोगों और पर्यटकों के मनों में भी ऊँचे तिरंगे को लहराते देख कर देशभक्ति का भाव भर गया।❖

सरस्वती विद्या मंदिर के होनहार सम्मानित

अनिला महाजन सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मनाली में वार्षिक उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में हिमालच शिक्षा समिति की अध्यक्ष अच्छर सिंह ठाकुर मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मनाली होटलियर्स एसासिएशन के महासचिव डोले राज ने की। होनहार विद्यार्थियों को मुख्यातिथि ने सम्मानित किया। मुख्यातिथि ठाकुर अच्छर सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों को लक्ष्य के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। जीवन में हमेशा आगे बढ़ने के लिए पूर्ण लग्न से काम करना चाहिए। प्रधानाचार्य गोपाल शर्मा ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्य तथा अध्यापकगण विशेष रूप से उपस्थित रहे।❖

Registration/Admission Open for Classes IV to X

Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only
A Culture Oriented English Medium School

(Affiliated to C.B.S.E. Delhi) **Website: www.ssnkumarhatti.com**

Run by:
Himachal Shiksha Samiti Shimla,
(A State unit of Vidya Bharti)

S.S.N.
PUBLIC SCHOOL
KUMARHATTI

Location: The Complex is situated on Barog bye-pass Road.
It is less than 2 km. from KUMARHATTI.

Managed by:
Jindal Charitable Trust
Nabha (Panjab)
01765-326661

J.K. Sharma
Principal
Ph.: 0177-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

खेतों में 'गुड़-गोबर' का घोल डालो और पैदावार बढ़ाओ

गुड़-गोबर का मुहावरा नकारात्मक अर्थों में लिए जाता है, लेकिन खेतों-बगीचों के लिए गुड़-गोबर वरदान साबित हो सकता है। अगर आप फलों और फसलों की पैदावार बढ़ाना चाहते हैं तो महंगे और सेहत पर खतरनाक असर डालने वाले कीटनाशक डालने की जरूरत ज्यादा नहीं है। गुड़ और गोबर के घोल का छिड़काव करके आप न केवल जमीन की उर्वरता, बल्कि मददगार सूक्ष्मजीवों, मित्र कीटों और केंचुओं की क्षमता में बढ़ोतरी भी कर सकते हैं। इस जीवामृत को घर पर बिना पैसा खर्च आसानी से बनाया जा सकता है। इसे जीरो बजट खेती कहा जा सकता है। डॉ. वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी सोलन ने इस पर सफल प्रयोग किए हैं। जीवामृत मिट्टी में अमृत की तरह काम करता है। यह जैविक और प्राकृतिक खेती को नई दिशा दे सकता है। जीवामृत तैयार करने के लिए पानी, गाय का गोबर, बेसन, गुड़, गोमूत्र और जंगल की मिट्टी ही चाहिए। अगर एक एकड़ भूमि के लिए जीवामृत तैयार करना है तो इसके लिए 200 लीटर पानी 10 किलोग्राम गाय का गोबर, एक किलोग्राम बेसन, एक किलोग्राम गुड़, पांच लीटर गोमूत्र और एक मुट्ठी जंगल की मिट्टी लेनी होगी। इसका घोल बनाकर 48 घंटे तक छाया में रखना होगा। इस मिश्रण को हर 12 घंटे में दक्षिणावृत घुमाना होगा। छानने के तीन-चार दिन बाद फसल में प्रयोग किया जा सकता है। 40 लीटर जीवामृत का प्रति बीघा की दर से महीने में एक बार छिड़काव करें। सेब और अन्य फलदार पौधों में जीवामृत का उपयोग उनकी आपसी दूरी के अनुसार करें। छोटे और उच्चतम घनत्व वाले फलदार वृक्षों में दो लीटर प्रति पेड़ प्रति महीना छिड़काव करें। उपयुक्त नमी के अभाव में सायं के समय ही सिंचाई या छिड़काव करें। कीटनाशकों के छिड़काव से सूक्ष्म जीव और केंचुए मर जाते हैं। इससे जमीन की उर्वरता कम हो जाती है। घर की चीजों से तैयार जीवामृत उनकी क्षमता बढ़ाता है। इसे खुद तैयार किया जा सकता है। इस पर सफल शोध हुआ है। दक्षिण भारत में भी जीवामृत पर कई शोध हुए हैं। इसका मकसद ही खेतों के लिए आवश्यक सूक्ष्म जीवों, मित्र कीटों और केंचुओं की संख्या बढ़ाना है। ❖

तापमान में दो डिग्री बढ़ोत्तरी से कृषि-उत्पादन में कमी

हिमाचल प्रदेश में पिछले 40 सालों में तापमान में दो डिग्री सेल्सियस की बढ़ोत्तरी हुई है। इसका विपरीत प्रभाव फसलों पर पड़ा है। तापमान में बढ़ोत्तरी के कारण गेहूं के उत्पादन में 10 फीसदी की गिरावट आई है। चिलिंग आवर्स कम होने के कारण सेब का उत्पादन भी प्रवाहित हुआ है। इसका खुलासा केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र सीपीआरआई में एक कार्यशाला के अवसर पर कुलपति ने किया। वह शिमला में ग्रामीण कृषि मौसम सेवा और मौसम परिवर्तन का फसलों के पैदावार पर पड़ रहे असर को लेकर आयोजित कार्यशाला में बतौर अध्यक्ष उपस्थित हुए।

उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रदेश में ठंड के घंटों में (चिलिंग आवर्स) में तेजी से गिरावट आ रही है, इससे न केवल पैदावार पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है बल्कि वस्तुओं की गुणवत्ता भी प्रवाहित हो रही है।

तेजी से हो रहा विकास और नई टैक्नोलॉजी के प्रयोग से ग्रीन हाउस गैस पर भी विपरीत प्रभाव एवं ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालय फसलों के विविधिकरण पर काम कर रहा है। तापमान के अनुकूल किसान फसल उगा सके इसके लिए विश्वविद्यालय फसलों के विविधिकरण पर काम कर रहा है। इसके लिए मौसम विभाग का सहयोग लिया जा रहा है। कौन सी फसल कब उगानी है?कहाँ पर उगानी है?कब काटनी है? इन सबकी जानकारी किसानों को एम-किसान योजना के तहत दी जा रही है। मौसम विभाग से 15 दिन पहले का पूर्वानुमान लेकर किसानों को बिजाई से लेकर कटाई तक की सारी जानकारियां इसके माध्यम से दी जा रही है कार्यशाला में नौणी विश्वविद्यालय के वीसी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। सीपीआरआई के निदेशक ने भी मौसम परिवर्तन के कारण पैदावार पर पड़ रहे असर पर अपना वक्तव्य दिया। मौसम विभाग शिमला के निदेशक ने कृषि क्षेत्र में मौसम विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विभाग फसल योजना के तहत प्रदेश में किसानों और बागवानों को पूर्वानुमान जारी करके उन्हें पैदावार संबंधी जानकारी प्रदान करवा रहा है।

खतरनाक रूप ग्रहण कर रहे हैं 'ग्लोबल वार्मिंग' व जलवायु परिवर्तन

पेरिस में जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) पर चल रहे विश्व सम्मेलन ने एक बार फिर ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन के कारण पृथ्वी के बढ़ते तापमान और उसके कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन की समस्या को विश्व मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है। सम्मेलन में समृद्ध तथा विकासशील देशों के बीच एक-दूसरे पर दोष व जिम्मेदारी थोपने के ड्रामे के बीच समय तेजी से निकलता जा रहा है। हालात तेजी से बिगड़ रहे हैं जिसके सबसे ताजा प्रमाण के तौर पर चेन्नई की हाल ही की अभूतपूर्व बारिश को माना जा रहा है। इसका जिक्र सम्मेलन में भी किया गया। यहीं नहीं एक नया संकट जो हमारे आसपास पनप रहा है वह है हिमाचल प्रदेश स्थित गेपांग गाथ (जिसे गापेन गोह भी कहा जाता है) नामक ग्लेशियर (हिमनद) का पिघलना। पिछले कुछ वर्षों में इसके पिघलने के कारण लाहौल-स्पीति जिले में सिसु नामक गांव से ऊपर पहाड़ पर एक विशाल झील बन गई है जिसका फैलाव 6-7 किमी बताया जा रहा है। तापमान बढ़ने की वजह से ग्लेशियर के पिघलने के कारण इसका जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। आशंका जताई जा रही है कि यह झील किसी भी दिन तबाही ला सकती है। इसके सबसे नजदीक अढ़ाई-तीन सौ की आबादी वाला सिस्सु गांव है। उल्लेखनीय है कि केदारनाथ त्रासदी का कारण भी ऐसी ही झील थी। दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में जियोमौर्फोलॉजी के प्रोफैसर मिलाप चंद शर्मा का कहना है कि झील में पानी के बढ़ते स्तर को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि सरकार को जल्दी ही कदम उठाने चाहिएं उनका कहना था कि हिमाचल प्रदेश में कई ग्लेशियर लेक हैं जिनमें पानी बढ़ने के कारण उनके फटने का खतरा बना रहता है। इस मामले में अब तक का सबसे भयंकर उदाहरण 'बड़ा शिग्री' ग्लेशियर से बनी झील के सन् 1860 में फटने का है जिसके कारण अटक छावनी (वर्तमान पाकिस्तान) का सफाया हो गया था।

बढ़ते तापमान के कारण हिमालय की हिमाच्छादित चोटियां तेजी से न केवल नंगी हो रही हैं बल्कि नंगी चोटियों का क्षेत्रफल भी वर्ष दर वर्ष बढ़ता जा रहा है। जे.एन.यू. के सैयद हसनैन ने गंगा के उद्गम गंगोत्री ग्लेशियर पर वर्षों तक अध्ययन करने के बाद अपने शोधपत्र ''इंटरनैशनल कमीशन ऑन स्नो एंड आइस'' में बताया कि गंगोत्री ग्लेशियर यदि इसी प्रकार पिघलता रहा तो अगले 35 साल में यह गायब हो जाएगा। इसी प्रकार दिल्ली स्थित टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीच्यूट (टी.ई.आर.आई) के निदेशक तथा नेपाल में हाईड्रोलॉजी के निदेशक का कहना है कि गंगा को बनाने वाले ग्लेशियर इस शताब्दी के अंत से पूर्व ही सूख जाएंगे। ऐसे में जीवन-दायिनी गंगा कैसे जिंदा रहेगी? इंडियन कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च के उपमहानिदेशक डॉ. जे.एस. समरा, जिनका संबंध देश में होने वाले जलवायु संबंधी बदलावों का अध्ययन करने से है, ने कुछ समय पहले चंडीगढ़ में एक स्थानीय समाचार पत्र को बताया था कि लाहौल-स्पीति स्थित चन्द्र घाटी में 'बड़ा शिग्री' दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ग्लेशियर है जो प्रति वर्ष 10 मीटर की दर से सिकुड़ रहा है जबकि राज्य में कई अन्य जगहों पर बिखरे छोटे ग्लेशियर 20 से 30 मीटर प्रति वर्ष की दर से सिकुड़ रहे हैं। गंगा को जीवित रखने वाली उत्तरांचल की हिमनदियों के सिकुड़ने की दर 3.7 से 21 मीटर प्रति वर्ष है। हिमनदियों के पिघलने से पहाड़ों में छोटी-बड़ी झीलें बन गई हैं जैसा कि पारछू (चीन) के मामले में हुआ। इस प्रकार की 249 झीलों का पता लगाया जा चुका है जिनमें से 22 अनुप्रवाह (डाऊनस्ट्रीम) वाले क्षेत्रों में स्थित इलाकों के लिए घातक मानी गई हैं। इनमें से 11 ऐसी हैं जिनके बारे में कहा जा रहा है कि उनके फटने की संभावना बहुत बढ़ चुकी है। बर्फ के लगातार पिघलने के कारण इन झीलों का क्षेत्रफल खतरनाक रूप से बढ़ रहा

है। ये कभी भी फ्लैश फ्लड्स (अचानक आने वाली बाढ़) ला सकती हैं जिससे होने वाली तबाही का मंजर हम केदारनाथ में देख चुके हैं। डा. समरा बताते हैं कि अध्ययनों के दौरान अभी तक हिमालय पर्वत शृंखला में कुल 5,802 हिमनदियों की पहचान की गई है, जिनमें से 3,252 नेपाल में तथा 1,550 अकेले हिमाचल प्रदेश में हैं। भूटान में 676 ग्लेशियर मिले जबकि शेष उत्तरांचल, सिक्किम व अरूणाचल प्रदेश में हैं। हिमाचल में जो हैं उनमें 286.3 क्यूबिक कि.मी. बर्फ का भंडार है जो अपने देश में इस्तेमाल किए जाने वाले कुल पानी का 18 प्रतिशत है। देश में जो भी पानी उपलब्ध है उसका 60 से 70 प्रतिशत इन्हीं हिमनदियों से मिलता है। 'ग्लोबल वार्मिंग' तथा 'क्लाइमेट चेंट' को सर्वाधिक खतरनाक बताते हुए उपमहानिदेशक ने कहा कि जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली को पानी पहुंचाने वाली उत्तर भारत की प्रमुख नदियों मसलन रावी, ब्यास, चिनाब तथा सतलुज को 4160.50 किमी में फैले 2,554 ग्लेशियरों से पानी मिलता है। सतलुज बेसिन में सबसे अधिक 945 हिमनदियां हैं, जबकि दूसरे व तीसरे नंबर पर चिनाब तथा ब्यास के बेसिन आते हैं। पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान की तो सारी अर्थव्यवस्था ही इन नदियों पर टिकी हुई है, ऐसे में ग्लेशियरों के विलुप्त होने का अर्थ क्या हो सकता है इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है- पीने को पानी नहीं होगा, सिंचाई के बिना खेत सूखेंगे और बिजली भी नहीं होगी। ❖

भारत में 'क्लाइमेट चेंज स्पेशल साइंस एक्सप्रेस' करेगी जनजागरण

15 अक्तूबर 2015 को नई दिल्ली से एक विशेष क्लाइमेट चेंज स्पेशल साइंस एक्सप्रेस रेलगाड़ी रवाना की गई। यह रेलगाड़ी पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए 18000 किलोमीटर की यात्रा तयकर भारत के 20 राज्यों के 64 स्थानों पर ठहरेगी और वैश्विक ताप के खतरों से सचेत करते हुए पर्यावरण सुरक्षा पर जानकारियों का आदान प्रदान करेंगी।

क्लीन एनर्जी के लिए मिले हाथ

2 दिसम्बर को पेरिस में 195 देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ दुनिया भर के चोटी के उद्योगपतियों ने क्लीन एनर्जी विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संकल्प लिया। इस पर आम सहमति बनती दिखाई दी। इस मौके पर जहां अमरीका के बिल गेट्स मौजूद थे तो भारत के रतन टाटा और मुकेश अंबानी भी थे। ये मौसमी बदलाव पर पेरिस में चल रहे सम्मेलन में भारत के उस आह्वान को आगे बढ़ाने की संकल्पना थी कि एक अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन समय की मांग है। बैठक के बाद एक 'ब्रेकथ्रू एनर्जी कोएलीशन' बनाने पर सब एकमत हुए। यह ऐसी 28 कंपनियों का एक अंतर्राष्ट्रीय समूह होगा जो कम लागत पर विश्वसनीय तौर पर कार्बन मुक्त उर्जा उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक इस गठजोड़ का उदघाटन नहीं हुआ है। बताया गया है कि इसका उद्‌घाटन मिशन इन्नोवेशन के साथ ही राष्ट्रपति ओबामा की मेजबानी में होगा और उस मौके पर भारत के प्रधानमंत्री भी वहां रहेंगे। इस पहल के उद्‌देश्य यानी क्लीन एनर्जी की आपूर्ति का वादा करने वाली शीर्ष कंपनियां ऐसे कदम उठाएंगी जिससे उनके 'रिसर्च एंड डेवेलपमेंट' में तेजी आएगी और उर्जा पारेषण सुगम होगा। इससे फायदा क्या होगा ? फायदा ये होगा कि उद्योग जगत के इन प्रयासों का लाभ आगे चलकर दुनिया भर के देशों की सरकारों को इस रूप में मिलेगा कि वे उर्जा की राह पर नई सोच के साथ बढ़ पाएंगी। इस गठबंधन में फेसबुक के मार्क जुकरबर्ग होंगे तो ब्रिटेन के वरलिन समूह के मुखिया रिचर्ड ब्रॉन्सन और एचपी के मैग व्हिटमैन भी होंगे। यदि यह प्रयास सफल होता है तो दुनिया की फासिल फयूल अर्थात् कोयले, पेट्रोल, डीजल जैसे धरती के नीचे से मिलने वाले ईधन पर उतनी निर्भरता नहीं रहेगी।❖

''बेटी एक वरदान''

पता जब चला जा कर अस्पताल
पिता का हुआ जान कर बुरा हाल,
नन्ही, सी जान माँ के पेट में पलती,
दुनियां को तो वह बहुत है खलती,
मार गिराएं उसे भी पिता की मर्जी,
पर माँ ने न सुनी यह अर्जी।
माँ ने जब तड़प-तड़प कर पूछा कारण,
कहा पिता ने बेटी होना नहीं साधारण!

कौन बाला को राक्षसों से बचाएगा,
कैसे बेटी के ससुराल का दहेजी-पेट भरवाएगा।
रोती बिलखती देख उसे कैसे सहूंगा,
पीड़ा उसकी देख पल-पल मरूंगा।
ससुराल छुड़ा कर ले आया तो क्या कहेंगे लोग,
उंगली उठा मेरी ही चिड़िया को कहेंगे ढोंग।
तड़पती माँ ने कहा, माना है नहीं यह आसान
पर बेटी को बचाने के लिए बेटी ही हो कुर्बान।
मारना कौन चाहे अपनी नन्ही सी जान को,
जान जीए मेरी जब बदले इस जहान को।
कमजोर पड़े दिलों की कड़ियां माँ बाप के आंसू निकल गए,
विधाता एक बार तू उत्पन्न करके तो देख मुझे
गर्व से सर न उठाया तो न कहना बेटी मुझे।
खा जाऊंगी दरिदों को नोच कर जिसने इज्जत का कत्ल किया,
तोड़ दूंगी अभिमान उसका, दहेज तुमने जिसको दिया,
पढ़ लिख कर बाबा ऐसा जोर चलाऊंगी,
मारपीट बेटी से हो तो सीना फाड़ खा जाऊंगी।
समाज बोला तो कसम से करके कुछ ऐसा दिखाऊंगी,
दंग रह जाएंगे सब बेटी का नाम जपवाऊंगी।
जलती रही बेटियां तो दुनियां को मैं बतलाऊंगी
जिसने नारी का किया अपमान, राख में मिलवाऊंगी।
मेरे वजूद बिन दुनिया पले मुमकिन नहीं
मैं खत्म हो गई तो जहान की धड़कन नहीं।
हसती अगर बुझी मर मिटेंगे।
फिक्र न करो माँ! बाबा देवी बन धरती पर आई हूं
गरूर मेरा है ऐसा कि राज करती आई हूं।
आंसू उमड़े पिता को हुआ अफसोस
कहने लगे बेटी से बदल कर अपनी सोच
करने चला था त्याग इस फल का
परिणाम बुरा था मेरी इस भूल का,
आ बेटी दुनिया मैं तुझे दिखाऊंगा
साथ तेरे समाज को बदल पाऊंगा।

सागरिका महाजन
खुशीनगर (नूरपुर)

अपणा हिमाचल

भरमौर, श्रीखंड, मणिमहेश की जहां होती यात्राएं,
समझ लो वह राज्य हिमाचल है।
शिपकिला, कुगती, कुंजुम है दर्रे जहां,
समझ लो वो राज्य हिमाचल है।
माँ नैना, ज्वाला, चिंतपूर्णी, चामुंड़ा की होती जयकार,
समझ लो वह राज्य हिमाचल है।
सेब, आलू, मशरूम जहां के जाने जाते,
समझ लो वह राज्य हिमाचल है।
व्यास, सतलुज, यमुना, रावी, चिनाब जहां बहती,
समझ लो वह राज्य हिमाचल है।
चंबा का चौगान, शिमला का ऐतिहासिक रिज मैदान जहां,
समझ लो वह राज्य हिमाचल है।
शीष पर बसा, आंचल बने रहना जिसे सुहाता,
समझ लो वह राज्य हिमाचल है..................

मनोज कुमार 'शिव'
बिलासपुर

नवम् सोपानम् संस्कृतं वदाम

1. भवत (पु.) भवत्या (स्त्री.) स्वास्थ्यम् कथम् अस्ति? – आपका स्वास्थ्य कैसा है?
2. इदानीं सम्यक् अस्ति। – अब ठीक है।
3. अस्थिभङ्ग कथम् अभवत्? हड्डी कैसे टूटी है।
4. सोपानतः पतितवान्/ पतितवती। – सीढ़ी से गिर पड़ा/ पड़ी।
5. सुखासनम्: (नपुं) सोफ़ा – विधानिका:(स्त्री)अलमारी
5. औषधाबन्धं कदा अपसारष्यन्ति?अपसारिष्यन्ति? – प्लास्टर कब हटाएंगे?
6. एक मासानन्तरम् – एक महीने बाद।
7. स्पष्टता के ज्वरः कदा आरभ्य अस्ति। –बुखार कब से है?
8. त्रिथ्यः दिवसेभ्यः अस्ति। – तीन दिनों से हैं।
9. रक्त परीक्षा कारिता वा? –खून टेस्ट करवाया क्या?
10. स्वः करिष्यामि? -कल करवाऊंगा/करवाऊंगी।
11. शीघ्रं स्वस्थ:/स्वस्थाभवतु। -जल्दी स्वस्थ हो जाईए।

शब्द कोषः (गृह वस्तु वर्गः)

आसन्दः (पु.)	कुर्सी	उत्पीठिकाः (स्त्री.)	मेज
कटः (पु.)	चटाई	खट्वाः (स्त्री.)	चारपाई
उपाधानम्: (नपुं)	तकिया	तल्पः (पु.)	तलाई/गद्दा
आच्छादकम्:(नपुं.)	चादर	पर्यङ्कः (पु.)	चारपाई
तूलिका (स्त्री.)	रजाई	कम्बलः (पु)	कम्बल

व्याकरणम् (विभक्तिः परिचयः)

संस्कृत भाषा में वाक्यों के अर्थ की स्पष्टता के लिए विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में विभक्तियां शब्द से बाहर दिखाई देती हैं किन्तु संस्कृत में विभक्ति शब्द (प्रतिपदिक) के साथ ही संलग्न होती है। जैसे हिन्दी में दशरथ का पुत्र राम है। संस्कृत में दशरथस्य पुत्रः रामः अस्ति इन विभक्तियों को सात भागों में बांटा जाता है। संस्कृत की विभक्तियों को हिन्दी के कुछ सामान्य चिन्हों के द्वारा दर्शाया जाता है।

विभक्ति	*विभक्ति चिन्ह*
प्रथमा (पु.)	ने
सम्बोधन (सं.)	हे! अरे!
द्वितीया (द्वि.)	को
तृतीया (तृ)	ने, से, के द्वारा
चतुर्थी (च.)	के लिए
पंचमी (प.)	से (अलग होने में)
षष्ठी (ष.)	का, के, की, रा, रे,री,
सप्तमी (स.)	में, पर, के ऊपर

प्रवेश एवं पंजीकरण सूचना

अनिला महाजन सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय

मनाली स्थित रांगड़ी

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड धर्मशाला से सम्बद्धता प्राप्त

प्रवेश एवं पंजीकरण सूचना हेतू:-

- नर्सरी से आठवीं कक्षा के लिए पंजीकरण एवं प्रवेश तिथि 27 जनवरी 2016
- नवम् से 10+1 कक्षा के लिए पंजीकरण एवं प्रवेश तिथि 1 अप्रैल से 10 अप्रैल 2016 तक
- विद्यालय में सभी कक्षाओं में प्रवेश केवल प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिया जाएगा।
- छात्रावास में प्रवेश हेतू पंजीकरण कक्षा चतुर्थ से 10+2 तक

AIEEE/IIT/JEE/PMT की तैयारी के लिए ABLES Academy के द्वारा राजस्थान से Satellite के माध्यम से तैयारी करवाई जाती है।

- *Virtual Class Room*
- *Smart Classes*
- *C.C.T.V. Camera*
- *Wi-Fi Campus*

पंजीकरण प्रारम्भ

विद्यालय में विशेष सुविधाएँ उपलब्ध

प्रवेश एवं पंजीकरण से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

प्रधानाचार्य:-94180-07551, उपप्रधानाचार्य:-98171-42907

कार्यालय:-01902-253777

www.svmmanali.org, www.shikshasmaiti.org E-mail: anilasvmmanali@rocketmail.com

ऐसे जांबाजों की कहानी जिन्होंने बचाई बाढ़ में फंसे लोगों की जिंदगियां

चेन्नई ने तूफान को हराना सीख लिया

चार दिन लगातार बारिश के बाद चेन्नई वासियों के चेहरे पर शिकन नहीं दिखी। मानों सबने एक-दूसरे का हाथ थामकर तय कर लिया है कि इस तूफान को हराकर ही रहेंगे। तेज बारिश की चेतावनी के बचे एक दिन का सामना करने के लिए लोग डटे रहे। तय कर लिया है कि सब ठीक कर लेंगे। राहत का काम समाजों-संगठनों के अपने हाथ में ले लिया है। कोई 75 हजार लोगों को खाना, दवाई, कपड़ा दे चुका है, तो कोई 1100 बोरी चावल-दाल पकाकर लोगों को बांट चुका है। उनके वाहन लगातार जरूरतमंदों तक पहुंच रहे हैं। प्रशासन से कोई उम्मीद नहीं है, क्योंकि वहां से कुछ हो नहीं रहा। हां, सेना की दक्षिण कमांड, चेन्नई विंग, एनडीआरएफ की केन्द्रीय टीम का काम गर्व के काबिल है। उन्होंने ही ज्यादा लोगों को बचाया है।

सुकन्या और उनके अजन्मे बच्चे को बचाने आया चेतक

चेन्नई के गुंडी इलाके में एक चार मंजिला मकान में तीन जानें फंसी थीं- 29 साल की सुकन्या, उसका तीन साल का बेटा और गर्भ में पल रही सात महीने की संतान। दो मंजिल तक पानी भरा था, दो दिनों से बिजली-पानी सब बंद। एयरफोर्स के जवान चेतक हेलीकॉप्टर से आए, उन्हें एयरलिफ्ट किया और ताम्बरम बेस लेकर आए। सुकन्या की हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि उसे तत्काल सेना के अस्पताल पहुंचाया गया। अब वे तीनों सुरक्षित हैं। यह तो केवल बानगी है। आर्मी की 40 रेस्क्यू टीमों के साथ एनडीआरएफ के 1200 जवान चेन्नई के हर इलाके में लागों को बचाने में लगे थे। नेवी की छह टीमें बोट के साथ इसी काम में लगी थीं। शुक्रवार दोपहर तक ही एनडीआरएफ 10 हजार 589 लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचा चुकीं थी। एयरफोर्स ने अराकोन्नम से मीनमबक्कम और ताम्बरम एयरबेस के लिए दो एयरब्रिज तैयार कर लिए। सैकड़ों जानें बचाई।

बोल-सुन न सकने वाले बच्चों के पास पहुंचे इलियाराजा

बोल-सुन और देख न सकने वाले बच्च्चों के लिटिल फ्लावर कॉन्वेंट स्कूल में चार फीट पानी

भर गया था। डरे-सहमे बच्चे फंसे थे। इलाके में पानी का स्तर काफी ज्यादा था। लेकिन तमाम चेतावनियों को नजरअंदाज करते हुए ख्यात संगीत निर्देशक इलियाराजा वहां मददगार बनकर पहुंचे। उन्होंने कहा कि जब बच्चे फंसे हैं तो मेरे लिए खतरे का कोई अर्थ नहीं है। तमिल फिल्मों के स्टार सिद्धार्थ भी लोगों की मदद के लिए आगे आए। सिद्धार्थ का घर भी बाढ़ में डूब गया है, लेकिन वे दूसरों की मदद के लिए निकले और कई जिंदगियां बचाईं।

इन्होंने राहतकर्मियों को बताया कहां करें मदद

श्री पी. मनीवत्रन कर्नाटक के आईएएस अधिकारी। जब चेन्नई में मोबाइल और लैंडलाइन फोन सेवा धवस्त हो गई तो राहतकर्मी और फंसे हुए लोगों में संपर्क नहीं हो पा रहा था। ऐसे में मनीवत्रन ने अपने आईएएस मित्र एलेक्स पॉल मेनन और 13 अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर बेंगलुरू में कम्यूनिकेशन कंट्रोल रूम शुरू कर दिया। ये समूह सोशल नेटवर्किंग पर मदद की गुहार लगाने वालों का डेटा जुटाते और चेन्नई में बचावकार्य में लगे लोगों को बताते कि कहां मदद की जरूरत है। इससे सैकड़ों जानें बचाई जा सकीं।

नाविक रोज बचा रहे 500 लोग

कोवालम से आए नाविक और मछुआरे सेवलाम रोजाना करीब 500 लोगों को बचा रहे हैं। दरअसल, यहां पर कासीमेडू, कोट्टीवक्कम कुपम और कोवालम आदि से सैकड़ों बोट और नाविक बाढ़ पीड़ितों को बचाने ट्रकों में भर कर आए हैं।

व्यवसायी टीम बनाकर कर रहे सेवा

शहर के मशहूर व्यवसायी सैम पॉल और उनकी टीम टुकड़ों में रोजाना लोगों की मदद करने निकल रही है। इसमें उनका साथ दे रहे हैं समाजसेवी अब्दुल गनी। ये लोग पानी में फंसे लोगों को बचा रहे हैं और उन्हें दवाएं दे रहे हैं।

युवा रिचार्ज कर रहे फोन

मुंबई के मोहसिन पटेल चेन्नई में फंसे लोगों के मोबाइल रिचार्ज कर रहे हैं। इस तरह की सेवा कई युवा दे रहे हैं। सैकड़ों की संख्या में ऐसे लोग भी सामने आए जिन्होंने सोशल साइट्स पर अपने घर और स्कूलों का पता लिखा और लोगों को ठहरने के लिए बुलाया।

फायर ब्रिगेड 24 घंटे कर रहे काम

चेन्नई के डिस्ट्रिक्ट फायर ऑफिसर एन विजय कुमार और उनकी टीम एक सेकंड के लिए भी कहीं खाली नहीं बैठती। इस टीम के सैकड़ों सदस्य रस्सी और लाइफ जैकेट की मदद से दिन-रात लोगों को बचा रहे हैं ये अब तक हजार से ज्यादा लोगों की जान बचा चुके हैं। **साभारः सोशल मीडिया**

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr. Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr. Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

दूरभाष पर सम्पर्क करें।

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:

Regular Clinic:
C/o K.K. Sharma Vivek Nagar
Pingah Road, Una (H.P.)

गुणकारी तुलसी- अनेक रोगों की एक औषधि

प्रत्येक हिन्दू घर में तुलसी का पौधा लगाया जाता है, इसे भगवान विष्णु की पत्नी का निवास माना जाता है। साथ ही पृथ्वी के कण-कण में भगवान का वास होना माना जाता है। भारतीय संस्कृति में ही पेड़ पौधों तथा हर जीव-जन्तु के साथ-केवल जो पर्यावरण संरक्षण की सुचेतना के तथ्यपूर्ण धरातल पर स्थित है। अनेक हिन्दू ग्रंन्थों में इस पौधे का महत्व दर्शाया गया है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने विभीषण के घर में तुलसी के पौधे का जिक्र किया है।

1. प्रात: खाली पेट तुलसी के 9-10 पते खाकर ऊपर से एक गिलास पानी पीकर टहलने से बल, तेज, स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है व जलंदर भगधर, कैंसर जैसी बीमारियां पास भी नहीं फटकती।
2. तुलसी का पौधा सामान्यतया दो प्रकार का होता है काली पत्तियों तथा हरी पत्तियों वाला।
3. तुलसी के स्वरस का पान करने से प्रसव वेदना कम होती है।
4. 20 तुलसी पत्र एवं 10 काली मिर्च एक साथ पीसकर हर आधे घंटे के अन्दर से बार-बार पिलाने से सर्प विष उतर जाता है।
5. तुलसी की पत्तियों को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद-खाज मिट जाती है।
6. शीत ऋतु में तुलसी की 5-7 पत्तियों में 3-4 काली मिर्च तथा 3-4 बादाम मिलाकर, पीसकर सेवन करने से हृदय को शक्ति प्राप्त होती है।
7. यह किडनी (गुर्दे) की कार्य शक्ति को बढ़ाती है।
8. तुलसी के 24-30 पत्तों को पीसकर उनमें 5 ग्राम मीठा दही मिलाकर 30-40 दिन सेवन करने से गठिया का दर्द, सर्दी, जुकाम, खांसी पुराने रोग में भी गुरदे, किडनी की पत्थरी, सफेद दाग या कोढ़, शरीर का मोटापा, दुर्बलता, पेचिस, कब्ज अमलता, मंगदाग्नि, गैस, बुखार, रक्तचाप उच्च या निम्न, हृदय रोग, श्वास रोग, दीमागी कमजोरी आदि रोग दूर हो जाते हैं।
9. तुलसी की पत्तियों को आंवले के साथ पानी में भिगोकर प्राप्त पानी से सिर धोने से सफेद बाल काले हो जाते हैं तथा बालों का झड़ना रूक जाता है।
10. इसकी माला पहनने वाले को आकाश से गिरने वाली बिजली नहीं मारती, ब्लड प्रेशर- नियंत्रण में रहता है तथा हृदय रोग नहीं होता।

महिलाएं कार्तिक महीने में तुलसी के पास संध्याकाल में नियमित रूप से दीप जलाती हैं। प्रतिदिन तुलसी का पूजन करती हैं, रोज जल चढ़ाती हैं ताकि पौधा हरा भरा बना रहे और उनके परिवार में सुख-शान्ति रहे। तुलसी के जन्म की कथा समुद्र-मंथन से जुड़ी है। समुद्र-मंथन के समय अमृत-कलश मिलने पर उसे देखकर देवताओं की आंखो में श्रम-सार्थकता से वशीभूत होकर आंसू निकल पड़े थे। उन्हीं अश्रु बूंदों से तुलसी का पौधा उत्पन्न हुआ मानते हैं। आयुर्वेद शास्त्र में इसे त्रिदोषनाशक कहा है। त्रिदोष यानि वात, पित्त, कफ। इसकी मुख्यत: दो प्रजातियां हैं-एक सामान्य हरी पत्तियों वाली, जिसे श्री तुलसी, श्वेत तुलसी या राम तुलसी कहते हैं। दूसरी प्रजाति के पौधों की पत्तियों का रंग नीलाभ होता है, जिसे कृष्ण तुलसी या श्याम तुलसी कहते हैं। तुलसी को 'अकाल मृत्युहरण सर्व व्याधि विनाशनम्' कहा गया है। तुलसी का झाड़ीनुमा पौधा अनेक रोगों में चमत्कारी औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है। तुलसी स्वाद में तीखी, कड़वी, थोड़ी कसैली और रूचि बढ़ाने वाली, वात और कफ नाशक, विषघन तथा चर्म रोगनाशक होती है।

सावधानी: तुलसी निषेध

उष्ण प्रकृति वाले, रक्तस्त्राव व दाह वाले व्यक्तियों को ग्रीष्म व शरद ऋतु में तुलसी का सेवन नहीं करना चाहिए। तुलसी के सेवन से डेढ़ घंटे तक दूध नहीं लेना चाहिए। इसका पौधा कीटनाशक होता है। इसकी सुगंध से आसपास की हवा शुद्ध रहती है। यह वायु प्रदूषण को कम करता है, तथा वायुमण्डल में ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ाता है। इससे दुर्गंध का नाश होता है और जहां तक इसकी सुगंध जाती है, वातावरण शुद्ध बना रहता है। अगर प्रत्येक व्यक्ति आज कम से कम एक पौधा तुलसी का लगाने का प्रयास करे तो यह आज बढ़ रहे वायु प्रदूषण तथा नष्ट होते पर्यावरण को बचाने में हमारा सार्थक प्रयास होगा।❖

आइंस्टाइन से भी आगे भारतीय बच्ची

भारतीय मूल की 12 वर्षीय लड़की लीडिया सेबेस्टियन का 'आईक्यू' आइंस्टाइन से भी तेज है। यूके के मेन्सा में आयोजित एक 'आईक्यू टेस्ट' में लीडिया ने 162 का संभावित सर्वाधिक स्कोर हासिल करके एल्बर्ट आईंस्टाइन और स्टीफन हाकिन्स को भी पीछे छोड़ किया है। ऐसा माना जाता है कि हाकिन्स और आईंस्टाइन का आईक्यू 160 था और मेनसा दुनिया की सबसे बड़ी और पुरानी आईक्यू सोसायटी मानी जाती। लीडिया अपने जन्म के छठे महीने में ही बोलने लगी थीं। चार वर्ष की उम्र से ही वह वायलिन बजा रही है। ❖

साभार: हिन्दू गर्जना

आयरलैण्ड में संस्कृत के श्लोकों से मोदी का स्वागत

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी विगत दिनों जब अमरीका की यात्रा पर निकले थे तो उनका रास्ते में वे आयरलैण्ड में भी रूकना हुआ। आयरलैण्ड की राजधानी डब्लिन में वहां के छात्रों ने संस्कृत के श्लोकों का सुस्वर उच्चारण कर उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री इस स्वागत से अभिभूत हो गए। बाद में उन्होंने कहा कि यदि भारत में ऐसा होता तो सेकुलरवादी इसे साम्प्रदायिकता बता देते । प्रधानमंत्री ने ठीक ही कहा। भारय की सेकुलर बिरादरी मनुष्यों की एक ऐसी विचित्र प्रजाति है जो केवल भारत में ही पाई जाती है। आयरलैंड, इंगलैण्ड के पश्चिम में स्थित कुल सत्तर लाख की आबादी वाला देश है। इसके उत्तरी भाग अर्थात् उत्तरी आयरलैण्ड अभी भी ब्रिटेन के ही अधिकार क्षेत्र में है। ❖

साभार: विदर्भ हुंकार

नास्तिक चीन में आस्तिक प्रयास गूंजा हरे कृष्ण हरे हरे

चीन में आधिकारिक तौर पर नास्तिकता को अपनाया गया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक चीन की 70 प्रतिशत आबादी नास्तिक है और बाकी आबादी का बड़ा हिस्सा बौद्ध और ताओ धर्म को मानने वालों का है। सार्वजनिक जगहों पर चीन में शायद ही कभी कोई धार्मिक अनुष्ठान होता है, लेकिन हाल ही में चीन की राजधानी बीजिंग के एक फाईव स्टार होटल में कीर्तन और नाच-गाने का आयोजन होते देखा गया। इस आयोजन में 250 से ज्यादा लोग शामिल थे। इनमें ज्यादातर चीनी थे और थोड़े-बहुत स्थानीय भारतीय निवासी थे। नाच-गाने का यह कार्यक्रम तीन घंटों तक चला। मौजूद चीनी लोगों में से ज्यादातर साफ-साफ कीर्तन का उच्चारण कर रहे थे जो चीनी भाषी लोगों के लिए एक आसान काम नहीं है। लोकनाथ स्वामी ने कहा, ''चीन में अध्यात्म को लेकर गहरी लालसा है। हालात बदल रहे हैं। हम चीनी लोगों में कृष्ण कीर्तन को लेकर उत्साह देख रहे हैं।''❖

साभार: हिन्दू गर्जना

अभिषेक को किया सम्मानित

भारत के युवा पूरे विश्व में अपनी प्रतिभा को लोहा मनवा रहे हैं जो भारत के लिए गर्व की बात है। मंडी में एक समारोह के दौरान ऑस्ट्रेलिया के मल्टी कल्चर्ज एंबैसेडर कोटली के अभिषेक अवस्थी को सांसद रामस्वरूप शर्मा ने सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि अभिषेक अवस्थी जो ग्रामीण परिवेश से हैं, ने ऑस्ट्रेलिया में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा कर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के युवा विश्व के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में हायर एजुकेशन ऑफिसर बनने के बाद मल्टी कल्चर्ज एंबैसेडर बनना भारत के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने अभिषेक अवस्थी को शॉल टोपी देकर सम्मानित किया।❖

मातृत्व का आदर्श-माता जीजाबाई

महाराष्ट्र के ठिकाना सिंदखेड़ के राजा लखुजी जाधव की पुत्री जिजाऊ बचपन से ही वीर, पराक्रमी तथा सच्ची राष्ट्र भक्त थीं। राजा लखु जी जाधव ने अपनी पुत्री को भी पुत्रवत् शिक्षा दिलवाई। जिजाऊ लाठी के द्वन्द में अपने चार बड़े भाईयों पर भारी पड़ती थी। वहीं जिजाऊ, शहा जी राजे से विवाह के बाद शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई के नाम से प्रसिद्ध हुई। माता जीजाबाई का जन्म पौष पूर्णिमा विक्रम सं. 1655, सन् 1599 में हुआ। आगामी पौष पूर्णिमा (14 जनवरी 2015) को उनका 406वां जन्म दिवस है। वीर प्रसूता माता जीजाबाई का जन्म दिन पूरे देश में समारोह पूर्वक मनाया जाना चाहिए। माता जीजा बाई के जन्म के समय देश के अधिकांश हिस्से में यवनों (मुगलों) का शासन था। मुगल शासक हिन्दू-समाज पर भीषण अत्याचार कर रहे थे।

बचपन से जीजाबाई विदेशी यवनों के अत्याचारों को देख कर दु:खी होती थी और उन्हें क्रोध भी आता था। इतना विशाल देश यवन सत्ता के अधीन था और विशाल हिन्दू समाज के वीरों द्वारा यवन सत्ता का प्रतिरोध न किए जाने पर क्रोध आता था। आठ वर्ष की आयु में शहा जी से विवाह होने के बाद भी उन्हें वही बैचेनी घेरे रहती तब उन्होंने अपने मन में यवनों के शासन को उखाड़ फेंकने का वज्र-संकल्प लिया, जिसे पूरा करने के लिए वे आजीवन प्रयत्नरत रहीं। शहा जी राजे अत्यन्त वीर थे, किन्तु कभी निजामशाही के लिए तो कभी आदिलशाही के लिए अपने शौर्य का उपयोग करने के कारण मन ही मन दुखी रहते थे। उनके मन में भी यवनों से संघर्ष का विचार आता था। जीजाबाई से यह छिपा न रहा, तब उन्होंने शहा जी को 'स्वराज्य' स्थापना के लिए प्रेरित करना शुरू किया। शहा जी महाराज ने पत्नी से मिली प्रेरणा से पूना को केन्द्र बना कर 'स्वराज्य की घोषणा कर दी। इससे यवनों का कोप उन पर टूट पड़ा। निजाम और आदिलशाह ने मिलकर पूना पर हमला कर दिया। शहाजी की हार हो गई और वे मुगलों के साथ हो गए। माता जीजाबाई ने तब अपने पुत्र शिवा को अपने संकल्प का केन्द्र बनाया तथा शहा जी ने गुप्त रूप से पूरी सहायता का वचन दिया। शिवनेरी के दुर्ग में शिवा का जन्म हुआ। कुछ बड़ा होते ही माता उन्हें रामायण और महाभारत की कहानियां सुना-सुनाकर भारत के गौरवशाली इतिहास की जानकारी देने लगी और भारत पर विदेशी हमलावरों के कब्जा करने तथा अत्याचारों से शिवा को अवगत कराने लगी। शिवा के मन में कूट-कूट कर 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना का ध्येय भरने लगी।

जीजाबाई शिवाजी के साथियों को भी पुत्रवत् प्रेम करती थी। वे प्रत्येक का पूरा ध्यान रखती थी, उनके परिवारों की भी चिन्ता करती थीं। माता जीजाबाई के मार्गदर्शन में शिवाजी ने यवनों को खदेड़ना शुरू कर दिया तो आदिलशाह ने शिवाजी की बढ़ती शक्ति को कुचलने के लिए शहा जी को बंदी बना लिया। लेकिन माता जीजा ने धैर्य से काम लिया तथा शहा जी को छुड़ाने के लिए खुद शस्त्र धारण कर पन्हालगढ जा पहुंची। शिवाजी की अद्भुत नीति-कुशलता से शहाजी को सम्मानपूर्वक छोड़ दिया गया। इसी तरह धोखे से शिवाजी को आगरा में बंदी बना लेने पर जीजाबाई ने धैर्य व साहस से उस घोर संकट में भी स्वराज्य के कार्य का सुचारू संचालन किया। 23 जनवरी, सन् 1664 को शहाजी राजे के निधन होने के बाद भी स्वराज्य की स्थापना का लक्ष्य पूरा करने में तत्पर रहीं। आखिर में जब ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी विक्रम सं. 1731, सन् 1674 के दिन शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हो जाने के ग्यारह दिन बाद आषाढ़ कृष्ण 9 (17 जून 1674) को संकल्प पूर्ति के संतोष के साथ महाप्रयाण कर गईं।

भारतीय हिन्दू-संस्कृति में नारी का सर्वोच्च स्थान यूं ही नहीं है। राष्ट्र के निर्माण की वास्तविक कारक मातृ शक्ति होती है। माता बालक को संस्कार प्रदान करती है। यह पहली घुट्टी ही राष्ट्र भक्ति तथा देश व धर्म की रक्षा में सर्वस्व समर्पण की हो तो राष्ट्र अजेय शक्ति से सम्पन्न हो जाता है। जीजा माता ने पूरे विश्व को मातृत्व का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। इसीलिए वे भारत में मातृत्व का आदर्श मानी जाती हैं। ❖

स्वतंत्रता का अर्थ समझाता गणतंत्र दिवस

भारत जैसे विशाल देश ने 26 जनवरी सन् 1950 को एक लिखित संविधान को स्वीकार कर साढ़े उन्तीस महीने पूर्व प्राप्त हुई स्वतंत्रता का गतिशील, विकासशील, समृद्धशाली बनाने हेतु एक कदम और बढ़ाया था। भारत राष्ट्र के जीवन में 26 जनवरी सन् 1950 का दिन बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन हमने स्वयं निर्मित रास्ते पर अपना कदम बढ़ाया था। 54 वर्ष के जीवन में हमें पीछे मुड़कर समीक्षा कर लेनी चाहिए जिससे गलतियों को दोहरा कर देश की प्रगति अवरूद्ध न कर देवें। क्या हमने संविधान की मूल भावना को समझते हुए उसको सही रूप से अंगीकार किया?उसमें 84 से अधिक संशोधन कर उसको इस स्थिति में पहुंचा दिया है कि अब एक नये संविधान के पुनर्लेखन की ही आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।

महात्मा गांधी, मौलाना आजाद, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल ने देशवासियों को सब्जबाग दिखाये थे कि आजादी की खुली हवा में सांस लेते ही प्रत्येक भारतीय आजाद हो जाएगा, दूध-दही की नदियां बहेंगी, पूरा भारत रामराज्य जैसा होगा, कहीं द्वेष, स्वार्थ, हिंसा, लूट-खसोट, मारकाट, बलात्कार, भ्रष्टाचार, पुलिस की क्रूरता नहीं होगी। राजनेता गांधीवाद के रास्ते पर चल कर राष्ट्रहित को सर्वोपरि समझेंगे, उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ जरा भी नहीं होगा। क्या ऐसा हो पाया? प्रत्येक भारतीय को थोड़ा ठहर कर सोचने की जरूरत है क्योंकि भारत के विषय में कोई भारतीय नहीं सोचेगा तो क्या कोई विदेशी सोचेगा?क्या सरदार भगत सिंह, अशफाक उल्लाह, चन्द्रशेखर आजाद सहित सैकड़ों शहीदों की दी गयी कुर्बानी बेकार चली जाएगी?क्या इस समय में भारतीय जन आजादी का अर्थ भूल गया है?जरा सोचिए कि जिनके लिए स्वतंत्रता प्राप्त की गई थी, उन्हें वह मिल पाई?क्या फिर जिनके लिए आजादी नहीं होनी चाहिए थी वे आजादी के हकदार बन कर सरकार को चला रहे हैं? एक समय था जब हम गुलाम भारत में अपने तिरंगे को फहराने के लिए जान की बाजी लगा देते थे, आज हम उसी तिरंगे को कोई सम्मान क्यों नहीं दे रहे हैं? वन्दे मातरम् गा-गा कर प्रभात फेरियों के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए लोगों में प्रेरणा का संचार करते थे आज उसी वन्दे मातरम् को अपमान जनक तरीके से फिल्मी तरन्नुम में गा-गा कर उसको श्रद्धा के प्रतिकूल बना रहे हैं। राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान आम बात होती जा रही है। आज जो लोग जेलों में होने चाहिए थे वे सांसद व विधायक बनकर जन प्रतिनिधि कहलाने लगे हैं। पुलिस उनकी रक्षा करने में मशगूल है, जबकि उन्हें पुलिस से भय होना चाहिए था। एक सत्यभाषी, सज्जन, ईमानदार, कर्मयोगी व्यक्ति को नित्य प्राप्त होती धमकियों से निपटने हेतु पर्याप्त पुलिस संरक्षण व सुरक्षा प्राप्त नहीं हो पा रही है।

चुनाव आयोग जब अपराधियों को चुनाव लड़ने से रोकने हेतु कोई कदम उठाता है तो विभिन्न दलों के हमारे जनप्रतिनिधि एक जुट होकर उस कदम का खुला विरोध करते हैं। देश में सारी समस्याओं की जड़ में बढ़ती हुई जनसंख्या है। यह जानते व समझते हुए भी कि जनसंख्या वृद्धि पर कोई प्रभावकारी रूकावट लगानी चाहिए, हमारे जनप्रतिनिधि इस कार्य में भी राजनीति करने से बाज नहीं आते हैं जिस कारण भारत की आबादी विस्फोटक स्थिति में सवा अरब की संख्या तक पहुंच रही है। आज सत्य, अहिंसा, राष्ट्रवाद, समाजवाद, गरीबी उन्मूलन, गांधीवाद, ग्रामीण विकास इत्यादि शब्द पुस्तकों में दब कर रह गए हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी, असम से गुजरात तक हिंसा, मारपीट, दंगे फसाद, अपना वर्चस्व फैलाये खड़े हैं। आतंकवाद से देश में दहशत का वातावरण उत्पन्न हो गया है। इस्लामी आतंकवाद के जरिये ये भारतीय कन्याओं को पर्दे में रखने हेतु उनके मुंह पर तेजाब फेंक कर जबरदस्ती बुरका पहनने को मजबूर कर उनकी स्वतंत्रता का हरण कर रहे हैं। इन घटनाओं की, मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति के चलते, कहीं निंदा भी नहीं की जा रही है। देश की सीमाएं निरन्तर

सिकुड़ती जा रही हैं। सीमाएं असुरक्षित भी होती जा रही हैं। देश को मजबूत बनाने के उपायों में भी राजनीति की जाती है तथा राजनीति दलों द्वारा कहा जाता है कि इन उपायों से पड़ोसी मुल्क दहशत में आ जाएगा। पड़ोसी मुल्क हमें दहशत में लाए तब कोई बात नहीं, हम उसको दहशत में लाने के उपाय करें तो हमारे राजनीतिक दल ही आड़े आते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने लोकतंत्र का मार्ग अपनाया परन्तु यह लोकतंत्र ही आज कुछ स्वार्थ, चतुर और शोषक रूढ़िवादिता का शिकार बन कर रह गया है तथा हमारी आर्थिक कमजोरी, बौद्धिक दुर्बलता और मानसिक रूढ़िवादिता आदि का भरपूर दोहन करके अवसरवाद तथा स्थितिवाद के सहारे कुछ लोग लोकशाही के सरताज बन गए। इस तरह हम अंग्रेजों की गुलामी से निकल कर काले अंग्रेजों की गुलामी में दाखिल हो गए हैं तथा हमारी स्वतंत्रता मात्र एक कल्पना का शब्द बन कर रहा गयी है। स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए गरीबी से पीछा छुड़ाकर हमें आर्थिक स्वावलम्बी होना चाहिए था जिस प्रकार जापान का हुआ। आर्थिक स्वावलम्बन कर्म और श्रम से प्राप्त होता है। हमें सामान्य से थोड़ा अधिक श्रम करना चाहिए था, तभी हम दरिद्रता को तोड़ सकते थे परन्तु देश में इन 54 वर्षों में कम से कम श्रम करके अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की जो प्रवृत्ति लोकव्यापी हो गयी उससे मुक्ति पाना बहुत जरूरी हो गया है। राजनेताओं द्वारा यह कहा जाता है कि देश में काम व काम के अवसरों का अभाव है, केवल अपनी दुर्बलताओं को छिपाने का ही प्रयास माना जाता है। केवल नौकरी ही काम या रोजगार नहीं होता। स्वयं का काम व रोजगार स्थापित करने हेतु सरकार की ओर से नित्य जो योजनाएं चल रही हैं, उनका लाभ नवयुवक नहीं उठा रहे हैं तथा उनमें स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने का साहस भी नहीं रह गया है। सरकारी सहायता को लूट सके सो लूट की नीयत से लूटा जा रहा है। आम भारतीय व्यक्ति यह भूल गया है कि ऋण लेकर एक दिन घी पिया जा सकता है, परन्तु ऐसा करने वाला व्यक्ति जीवन भर रूखा-सूखा खाकर ही जीवन व्यतीत कर पाता है।

अत: अपने विचारों में परिवर्तन कर हमें स्वयं का व्यवसाय लगाकर आर्थिक स्वावलम्बन की ओर गतिशील होना ही पड़ेगा। देश की स्वतंत्रता के 54 वर्ष के जीवन में हमें सरकारी सेवाएं प्राप्त करने, रोजगार के लिए सरकार पर निर्भर रहने तथा परिश्रम से घबराने की प्रवृत्ति को छोड़ना पड़ेगा तभी हम सही अर्थ में स्वतंत्र हो पाएंगे। यदि हमें स्वतंत्रता का स्वर्ग देखना है तो हमें स्वाधीनता के रास्ते पर शिक्षा, श्रम तथा स्वास्थ्य की सीढ़ियों पर चढ़ने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता कभी भी स्वच्छंदता का बोध नहीं कराती है। यदि स्वच्छंदता का बोध होता है तो देश विघटनकारी व पतनकारी शक्तियों का शिकार हो जाता है तथा स्वतंत्रता गुलामी में बदल जाती है। यदि हम शिक्षा की क्यारी में त्याग, प्रेम, सहिष्णुता और धैर्य के पौधे लगाएं तो आर्थिक आत्मनिर्भरता के पुष्प खिलने से कोई शक्ति हमें नहीं रोक सकती। भारत ने त्याग, प्रेम, सहिष्णुता के सहारे ही प्राचीन समय में परम वैभव की स्थिति को प्राप्त किया था। आज जरूरत है वास्तविक आजादी को बचाने के लिए सभी भारतीयों की एक जुटता के प्रयासों की। एक आजादी का आंदोलन हमें काले अंग्रेजों के विरूद्ध शुरू करना पड़ेगा क्योंकि इन काले अंग्रेजों के दिल से अंग्रेजियत का प्रेम निकला नहीं है तथा ये अंग्रेज भारतीय संस्कृति व सभ्यता को भुला कर देश की एकता, अखण्डता तथा समृद्धि को नित्य कम करने में ही अपना सहयोग देते हैं एवं देश की अस्मिता के साथ खिलवाड़ करने में भी ऐसे लोग कोई कोताही नहीं बरतते। देशी अंग्रेज, विदेशी अंग्रेजों से ज्यादा खतरनाक साबित हो रहे हैं, जो देश को जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा इत्यादि के नाम पर खण्ड-खण्ड करने में जुटे हुए हैं जिससे देश में अलगाववाद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद तथा शोषण पनप रहा है। हमारा धर्म भारतीय है। हमारी धार्मिक पुस्तक 26 जनवरी सन् 1950 को अपनाया गया संविधान है। अत: उसी की पूजा-अर्चना करके ही हमारा देश विश्व में महान होकर विश्व गुरू की पदवी दुबारा से प्राप्त कर सकेगा। हम बस इस देश की संस्कृति से जुड़े भारतीय हैं और इसका हमें गर्व होना चाहिए।

अत: अपने विचारों में परिवर्तन कर हमें स्वयं का व्यवसाय लगाकर आर्थिक स्वावलम्बन की ओर गतिशील होना ही पड़ेगा। देश की स्वतंत्रता के 54 वर्ष के जीवन में हमें सरकारी सेवाएं प्राप्त करने, रोजगार के लिए सरकार पर निर्भर रहने तथा परिश्रम से घबराने की प्रवृत्ति को छोड़ना पड़ेगा तभी हम सही अर्थ में स्वतंत्र हो पाएंगे।

महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

"मेरे बदन पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेजी हकूमत के कफन में आखिरी कील साबित होगी" यह भविष्यवाणी कर देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देश की युवा पीढ़ी में नई शक्ति का संचार करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी और पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी सन् 1866 को पंजाब के जगराओं के पास स्थित ढुडी के गांव में हुआ। उनके पिता राधा कृष्ण जी अध्यापन का कार्य करते थे और शुद्ध विचारों वाले धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, जिसका पूरा प्रभाव उनके बालक लाजपत राय पर पड़ा। लाला जी की उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। वकालत पास करने के बाद हिसार जाकर वकालत के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेने लगे और कई वर्ष वहां के म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष रहे। कड़ी मेहनत और ईमानदारी के कारण वकालत में काफी प्रसिद्धि मिली जिसके कारण वह हिसार छोड़ कर लाहौर आ गए जोकि उन दिनों क्रांतिकारियों का गढ़ था। यहां पहुंच कर भी अपने दयालु स्वभाव के कारण हमेशा गरीब, पिछड़ों और जरूरत-मंदों की सहायता के लिए आगे होकर कार्य करने लगे। बंगाल में पड़े भयंकर अकाल में लोगों की सहायता के लिए गांव-गांव घूमकर धन इकट्ठा किया। उपरांत देश की आजादी के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे जिसके कारण अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर मांडले जेल भेज दिया जहां से रिहाई के बाद सन् 1914 में कांग्रेस के एक डैपुटेशन में इंगलैंड गए और वहां से जापान चले गए। इसी दौरान प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो जाने पर अंग्रेज सरकार द्वारा इनके भारत आने पर रोक लगाने के कारण जापान से अमेरिका चले गए और वहां रहकर देश को आजाद करवाने के लिए प्रयास करने लगे। प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर भारत लौट कर कांग्रेस में वरिष्ठ नेता के रूप में स्थान बनाया तथा कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए। लाहौर आकर फिर से देश को आजाद करवाने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हो गए। क्रान्तिकारी गतिविधियों के साथ-साथ युवाओं को शिक्षित करने के लिए अपने पास से चालीस हजार रूपए देकर अपने मित्र के सहयोग से लाहौर में दयानंद एंग्लो विद्यालय की स्थापना की, जहां युवाओं में देश प्यार का जज्बा भरा जाने लगा। लाला जी हमेशा ही अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का विरोध बहुत जोश से करते थे और यही कारण था कि सन् 1928 में देशवासियों पर काला कानून लादने की अंग्रेजों की कोशिश का लाहौर में विरोध का नेतृत्व 62 वर्षीय लाला जी ने स्वयं करने का निर्णय किया। 30 अक्तूबर के दिन साइमन कमीशन के लाहौर पहुंचने पर लाला जी के नेतृत्व में हजारों देशवासियों ने बहुत बड़ा जलूस निकाल स्टेशन पर साइमन कमीशन का 'साइमन गो बैक' के नारों से स्वागत किया, जिससे क्षुब्ध होकर पुलिस कप्तान स्कॉट ने लाठीचार्ज का हुक्म देकर खुद लाला जी पर लाठियां बरसाई जिससे वह बुरी तरह जख्मी हो गए और अंततः 17 नवम्बर सन् 1928 के दिन देश की आजादी के लिए लड़ने वाले इस शूरवीर ने स्वतंत्रता संग्राम रूपी यज्ञाग्नि में अपने प्राणों की आहुति दे दी।❖

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

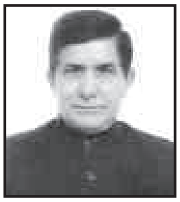

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up, Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर
गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

पथराव से नहीं पस्त हुए हौंसले, पढ़ाते रहे हिन्दी

पूरब का स्विटजरलैंड कहे जाने वाले नगालैंड में अब हिंदी पढ़ाने और बोलने पर कोई पत्थर नहीं मारता और न ही थकता है। यहां लोगों को धीरे-धीरे हिंदी भी रास आने लगी है। जो देश की एकता और अखंडता के लिए अच्छा संकेत है। नगालैंड के दीमापुर के राष्ट्रभाषा हिंदी शिक्षण संस्थान के प्राचार्य एम.पी. तेमजन जामीर ने सन् 1988 में जब नगा लोगों को हिंदी पढ़ाने का अभियान शुरू किया, तो उनके समाज के लोगों ने ही एक तरह से उनका बहिष्कार शुरू कर दिया। तब कई बार हिंदी पढ़ाने की वजह से उन पर पथराव हुआ। नगा लोग उन्हें देखकर थूकते थे। जामीर कहते हैं, 'चूंकि खुद भी नगा समुदाय के 'आओ' जनजाति से हूं, इस वजह से हिंदी को बढ़ावा देने के बावजूद मेरी हत्या नहीं की गई'। नगालैंड प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सचिव मदन प्रसाद गुप्ता इस बारे में कहते हैं कि देश की एकता और अखंडता बरकरार रखने के लिए नगालैंड में हिंदी का प्रचार प्रसार होना बहुत ही जरूरी है। बॉलीवुड की फिल्मों और हिंदी धारावाहिकों की वजह से नगालैंड में हिंदी का प्रभाव बढ़ा है। मगर वह संतोषजनक स्थिति में अब तक नहीं पहुंचा है। वे बताते हैं कि हिंदी देवनागरी लिखावट है। नगा वर्णों का उच्चारण देवनागरी उच्चारण से बहुत मिलता-जुलता है। दूसरे शब्दों में कहें, तो नगा वर्णों का उच्चारण देवनागरी ही है। यही वजह है कि नगामिस बोली की देवनागरी लिपि तैयार की गई है और यह काम किया है एम.पी. तेमजन जामीर ने। ❖

..... पृष्ठ 5 का शेष

जरूरी है।

बहुजन समाज की उन्नति उपर्युक्त समता-बंधुता-स्वातंत्र्यता-समरसता इन तत्वों के आधार पर हो सकती है। स्वामी विवेकानंद ने बहुजन समाज की उन्नति के लिए दो बातों की आवश्यकता प्रतिपादित की हैं। उनमें से पहली शिक्षा की और दूसरी सेवा की। 'राष्ट्र' की साधारण जनता में बुद्धि का विकास जितना अधिक, उतना राष्ट्र का उत्कर्ष अधिक। हिन्दुस्थान देश विषमता के इतने निकट पहुंचा, इसका कारण यही है कि विद्या तथा बुद्धि का विकास दीर्घ अवधि तक मुठ्ठी भर लोगों के हाथ में ही रहा। यह मानो अपने अकेले के हक की बात है। ऐसी जिद लेकर इन मुठ्ठीभर लोगों ने समूची विद्या को अपनी कोठरी में ही कैद कर रखा। उनको इसमें राजाओं का समर्थन भी प्राप्त हुआ और उसी के फलस्वरूप साधारण जनता निरी गंवार रहकर हिन्दुस्थान विषमता के रास्ते पर बढ़ा। इस स्थिति में से हमें अगर फिर से ऊपर उठना है तो शिक्षा का प्रसार साधारण जनता में करने को छोड़कर दूसरा कोई उपाय नहीं।

भारत के गरीब, भूखे-कंगाल, पिछड़े, घुमंतु समाज के लोगों को शिक्षा कैसे दी जाए। गरीब लोग अगर शिक्षा के निकट पहुंच न पा रहे हों तो शिक्षा को उनके तक पहुंचाना चाहिए। 'दुर्बलों की सेवा यही नारायण की सेवा है। दरिद्र नारायण की सेवा, जीव भावे शिव सेवा' यह रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द ने दिखाया हुआ मार्ग है। लोक शिक्षण तथा लोकसेवा के लिए अच्छे कार्यकर्ता होना जरूरी हैं। कार्यकर्ता में सम्पूर्ण निष्कपटता, पवित्रता, सर्वस्पर्शी बुद्धि तथा सर्व विजयी इच्छा शक्ति इस सभी की आवश्यकता है। इन गुणों के बल पर मुठ्ठीभर लोग भी यदि काम करने में जुट गये तो सारी दुनिया में शांति हो जायेगी।

समरसता स्थापित करने हेतु 'सामाजिक न्याय' का तत्व भी उतना ही जरूरी है। आज की भाषा में 'आरक्षण' यह सामाजिक न्याय का एक साधन है साध्य नहीं। यह ध्यान रखना जरूरी है। डॉ. आंबेडकर धर्म पर गहरा विश्वास रखने वाले थे। धर्म के कारण ही स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और न्याय की प्रतिस्थापना होगी यह उनकी मान्यता थी। धर्म ही व्यक्ति तथा समाज को नैतिक शिक्षा दे सकता है। धर्म को राजनीतिक हथियार के रूप में उन्होंने कभी इस्तेमाल नहीं किया। बौद्ध मत ग्रहण कर उन्होंने स्वातंत्रता, समता-बंधुता-न्याय समाज में प्रतिस्थापित करने का एक मार्ग प्रस्तुत किया।

इस पृष्ठभूमि पर 'समरसता' यह तत्व आज के जमाने का प्रमुख धर्म है और उसका उदघोषण है 'बंधुभाव यही धर्म है।'

-लेखिका, भटके विमुक्ति विकास परिषद, मुंबई की अध्यक्षा हैं

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

भारत भूमि की मुक्ति के अद्‌भुत योद्धा और महान देशभक्त सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 को उड़ीसा के कटक नगर के पास छोटे-से गांव कोडोलिया में प्रसिद्ध सरकारी वकील जानकीनाथ बसु के घर में हुआ। बचपन से ही वह बहुत जिज्ञासु, गम्भीर, दानी और मेधावी छात्र थे। वह हमेशा ही अपनी कक्षा में प्रथम आते थे। देश भक्ति उनके अंदर इस कदर कूट-कूट कर भरी थी कि अपने साथ पढ़ने वाले अंग्रेज बच्चों की किसी भी गलत बात को कभी सहन नहीं करते थे। दसवीं करने के बाद कोलकाता के प्रैसीडैंसी कॉलेज से एफ.ए. पास किया और पिता के आदेश पर लंदन जाकर इंडियन सिविल सर्विस' की परीक्षा पास करने के बाद तत्कालीन ब्रिटिश राज्य सचिव लार्ड लिटन को पत्र लिखकर हिला दिया कि 'मैं एक विदेशी सत्ता के अधीन कार्य नहीं कर सकता' और स्वदेश जाकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े, जिसके कारण उन्हें कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी।

मातृभूमि को आजाद करवाने के लिए देशबंधु चितरंजन दास की अपील का इन पर बहुत प्रभाव पड़ा और सक्रिय रूप से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण बंदी बना लिए गए। रिहाई के बाद वह स्वराज पार्टी के दैनिक समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक के रूप में कार्य करने लगे और सन् 1924 में कोलकाता कार्पोरेशन के कार्यकारी अधिकारी बने। सन् 1927 में पटना में 10000 महिलाओं के साथ विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और गिरफ्तार कर लिए गए। रिहाई के बाद देश को आजाद करवाने के लिए काबुल के रास्ते जर्मनी पहुंच कर हिटलर से मिलकर सहयोग का आश्वासन लिया, फिर सिंगापुर पहुंच कर 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। 21 अक्तूबर 1943 को अस्थाई आजाद हिन्द सरकार की स्थापना कर आजाद हिन्द फौज का गठन किया जिसे जापान, इटली, जर्मनी, थाईलैंड और बर्मा ने मान्यता देकर हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। दूसरे विश्व युद्ध में लड़ते हुए आजाद हिन्द फौज ने अराकन, टिडिम और कोहिमा पर कब्जा करने के साथ-साथ मोरांग से पालेल तक का 1500 वर्ग मील का इलाका कब्जे में ले लिया। अभी सेना अपने जीत अभियान में आगे बढ़ ही रही थी कि फौज का एक अधिकारी दुश्मन से मिल गया जिससे सभी गुप्त रहस्य दुश्मन को पता चल गए और उन्होंने हवाई हमले शुरू कर दिए और इसके

साथ ही साथ सहयोगी देशों का पूरा साथ न मिल पाने के कारण देश को आजाद करवाने का मौका हाथ से निकल गया। इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि 23 अगस्त सन् 1945 को टोक्यो रेडियो ने फारमोसा के निकट एक हवाई दुर्घटना में इनके मरने की खबर दी लेकिन इनके मरने की सच्चाई का आज तक पता नहीं चल पाया है। सरकार ने सन् 1956 में इसकी जांच के लिए 13 सदस्यीय शाहनवाज कमेटी और फिर 20 जुलाई सन् 1970 को पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जी.डी. खोसला के अध्यक्षता पर आधारित एक सदस्यीय कमेटी बनाई जिसने 10 जुलाई सन् 1974 को 500 पृष्ठों की रिपोर्ट गृहमंत्री को सौंपी थी जिसे पिछली एन.डी.ए. सरकार ने दोबारा उनकी मृत्यु की जांच शुरू करवाई परंतु आज तक कोई परिणाम सामने नहीं आया। ❖

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

पहेलियां

1. चार पांव पर चल न पाए, चलते को भी वह बैठाए।
2. मारे से वह जी उठे, बिन मारे मर जाय।
3. चल पड़ती तो चल जाती, बिना सहारे ठहर न पाती
4. छोटे से मियां जी, दाढी सौ गज की।
5. भूरा बदन तीन रेखाएं दाना खाती हाथ से बीन बताओ कौन।

उत्तर: 1.कुर्सी, 2.ढोलक, 3. साइकिल, 4.पतंग, 5.गिलहरी

हंसते-हंसते

1. एकमुखी- क्या तुम्हारी गाड़ी सही हालात में है।
   तीनमुखी- बिलकुल! हॉर्न को छोड़ कर बाकि सारी चीजें शोर करती हैं।
2. एकमुखी- क्या मैं तुम्हारे होमवर्क में तुम्हारी मदद कर सकता हूं?
   तीनमुखी- नहीं धन्यवाद! गलत तो मैं इसे खुद भी कर सकता हूं।
3. इंटरव्यू लेने वाला एकमुखी से, तुमने अपनी पिछली जॉब क्यों छोड़ी?
   एकमुखी- क्योंकि कम्पनी कहीं छोड़ के चली गई और मुझे बताया ही नहीं।
4. एकमुखी- आज टीवी पर 30 फीट का सांप दिखाने वाले हैं।
   तीनमुखी- अच्छा! पर मैं नहीं देख सकूंगा।
   एकमुखी- क्यों?
   तीनमुखी- मेरा टीवी सिर्फ 21 इंच का ही है।

प्रश्नोत्तरी-

1. उत्तर भारत का दूसरा सबसे ऊंचा तिरंगा कहां फहराया गया है?
2. गीता महोत्सव कहां आयोजित किया गया?
3. रक्षा सेनाओं के कमाण्डर्स की बैठक हाल ही में कहां हुई?
4. दिल्ली की पहली महिला लोकायुक्त का नाम क्या है?
5. हाल ही में हिन्दी भाषा का साहित्य अकादमी पुरस्कार किस साहित्यकार को दिया गया है?
6. राष्ट्रीय गणित दिवस किस गणितज्ञ की याद में मनाया जाता है?
7. ऋतुराज किसे कहा जाता है?
8. प्रदेश में पहला हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज कहां स्थापित होगा?
9. सभी राशियों का स्वामी कौन है?
10. पॉलीथीन पर पाबंदी लगाने वाला हिमाचल प्रदेश के बाद दूसरा राज्य कौन सा है?

विश्व का पहला सोलर एअरपोर्ट - कोच्चि

ऊर्जा की कमी को दूर करने के लिए ऊर्जा के नए स्त्रोतों को खोजा जा रहा है। इसी क्रम में कोच्चि अतंरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पूरी तरह से सौर ऊर्जा से चलने वाला भारत ही नहीं, दुनिया का पहला हवाई अड्डा बन गया। हवाई अड्डा परिसर में 45 एकड़ जमीन पर 46,150 सोलर पैनल्स लगाए गए हैं जिससे कोच्चि एयरपोर्ट को अपने संचालन के लिए हर दिन 50,000 से 60,000 यूनिट सौर ऊर्जा प्राप्त होगी। कोच्चि हवाई अड्डे के प्रबंध निदेशक वी.जे. कुरियन के अनुसार,

कोच्चि हवाई अड्डे को एक दिन में लगभग 52,000 यूनिट बिजली की जरूरत होती है, जो इन संयंत्रों से प्राप्त ऊर्जा से पूरी हो रही है। केरल के मुख्यमंत्री ओमन चांडी मंगलवार 18 अगस्त को इस सौर ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन कर खुशी जाहिर की। कोच्चि एयरपोर्ट की विज्ञप्ति में कहा गया है कि 2013 में हवाई अड्डे के आगमन टर्मिनल ब्लॉक के छत पर 100 मिलोवाट बिजली पैदा करने योग्य एक संयंत्र लगाया गया था। 400 सोलर पैनल के साथ बने इस संयंत्र की क्षमता सालभर में बढ़ाकर 1,000 किलोवाट कर दी गई। इसके बाद यहां 12 मेगावाट क्षमता का संयंत्र लगाया गया। इसके लिए 45 एकड़ जमीन पर 46,150 सौर पैनल लगाए गए। ज्ञात हो कि इस संयंत्र को कोलकाता के विक्रम सोलर प्रा. लि. ने स्थापित किया है। ❖

मातृवन्दना

सदस्यता अभियान 2016-17

1-20 फरवरी 2016

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नववर्ष का आकर्षक क्लैंडर निःशुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990

email: matrivandanashimla@gmail.com

website: www.matrivandana.org

वार्षिक शुल्क

100 रुपए

आजीवन सदस्य (15 वर्ष)

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

MIT GROUP OF INSTITUTIONS BANI TEHSIL BARSAR DISTT. HAMIRPUR

H.P.-174304 (on UNA Express Highway)

B.tech, Polytechnic & International School

B.tech Courses	Polytechnic Courses	MIT International School
Mechnical Engg	Mechnical Engg	Nursery – 10th
Civil Engg	Civil Engg	
Electrical Engg	Electrical Engg	
Electronics and communication engg	Electronics and communication engg	
Computer Engg	Computer Engg	
Electrical and electronics Engg	Automobile Engg	
	Hotel Management	

Facilities:-

Transport Facility Available Separate boys and Girls Hostel Wifi Campus

Experienced and well qualified Faculty Best placements and Merits Record

Special Scholarships and discounts for low income students

Gym and Indoor/ Outdoor games facilities Restaurants and Cafes.

E-mail: mit_poly@yahoo.com
mit_engg@yahoo.com
website: www.mithmr.com

Admission Help line: 9805034000, 9805516018, 9805516003, 9805516030, 9805516001

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

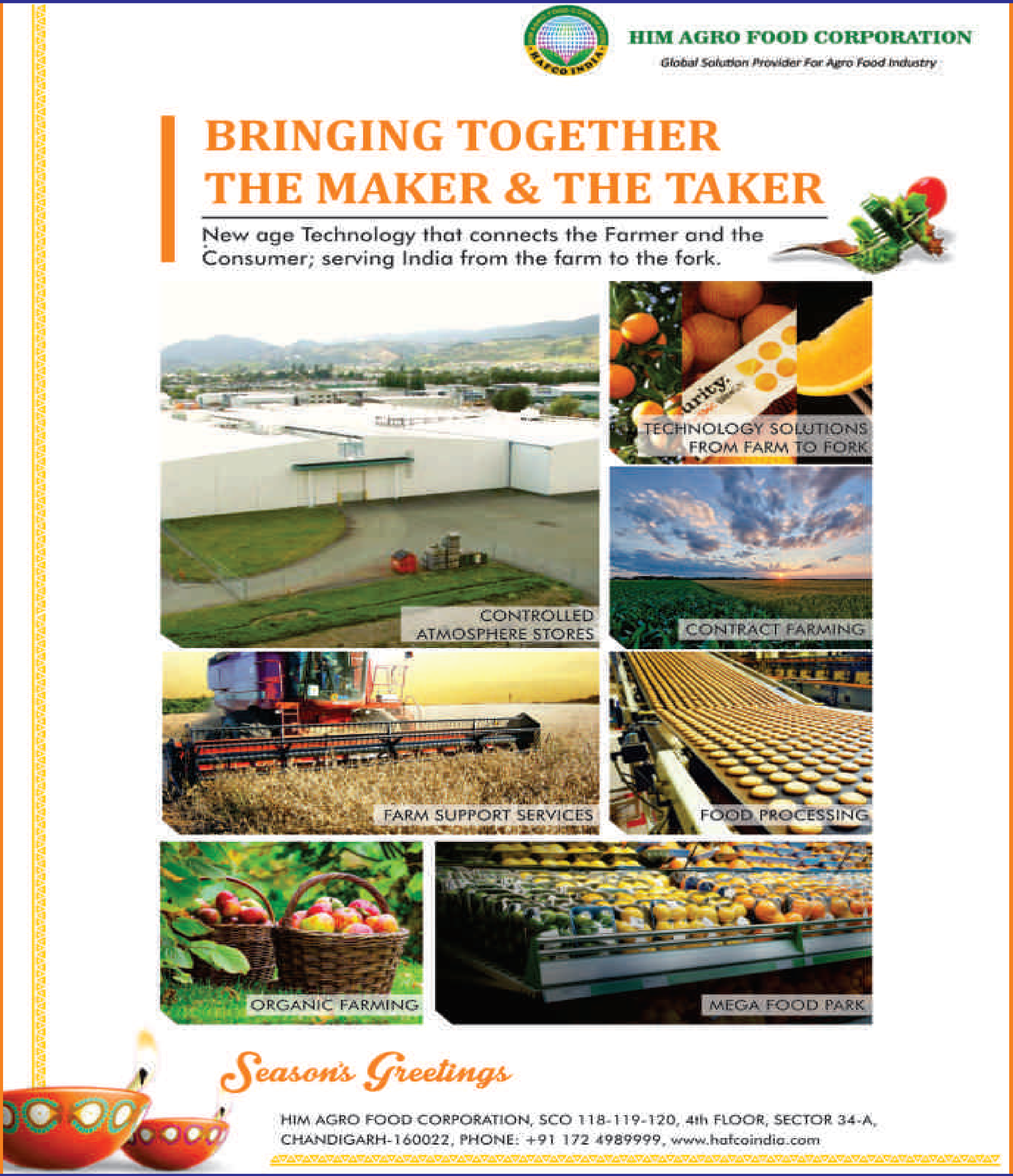

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना
प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2,
उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।